सतसई

अर्थात

श्री महाराज परमाचार्य्य गोस्वामी
तुलसीदास कृत नीति शास्त्र में सात
सौ दोहावली

जिसको

श्रीयुत परम प्रवीण गुण ग्राहक
गुणियुन सुखदायक मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक नीतिज्ञ ने हिन्दी
भाषानुरागियों को राजनीति में आरूढ़
कराय सकलोपाधि से निर्द्वन्दता के हेत
अपने पण्डितों से यथा विधि शुधवाय

लखनऊ

निज यन्त्रालय हजरत गञ्ज में छपवाया

सन १८७३ ई०
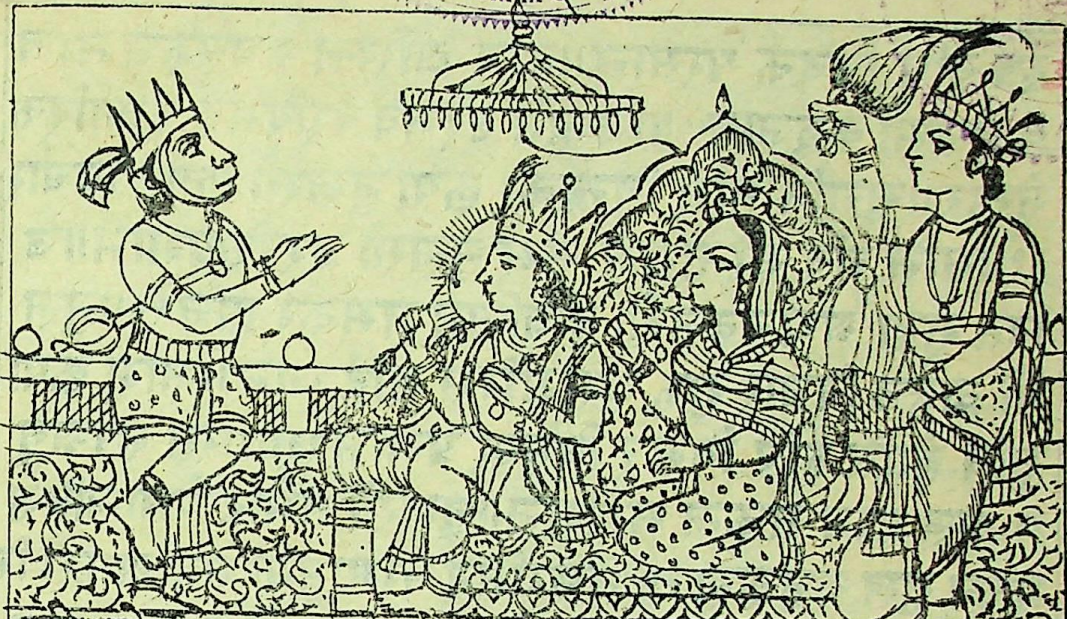
श्रीगणेशाय नमः नमो नमो श्रीराम प्रभु परमातम पर
धाम॥ जेहि सुमिरत सिध होतहैं तुलसी जनमन काम१
रामबाम दिसि जानकी लषन दाहिनी वोर॥ ध्यान सकल क
ल्यान कर तुलसी सुर तरु तोर॥२॥ परम पुरुष परधाम
वर जापर अपर न आन॥ तुलसी सोससुकृत सुनत राम
सोई निर्वान।३। सकल सुषद गुनजासु सो राम कामना
हीन॥ सकल काम प्रद सर्वहित तुलसी कहहिं प्रवीन४
॥ जाके रोमरोम प्रति अमित अमित ब्रह्मंड॥ सो देखत
तुलसी प्रगट अमल सुअचल प्रचंड।५। जगत जननि श्री
जानकी जनक राम सुभरूप॥ जासुकृपा अतिअघहरनि
करनि विवेक अनूप ६॥ तातमातु परजासुके तासु नले
सकलेस॥ ते तुलसी तजिजात किमि तजिघर तरपरदेस
७॥ पिता विवेक निधानवर मातु दयाजुत नेह॥ तासु सु
वन किमिपायहे अनतअटन तजि गेह ८॥ बुद्धिविनै ग
ति हीन सिसु सुपथ कुपथ गतजान॥ जननि जनक तेहि
किमितजें तुलसी सरिस अजान९॥ मात तात सियराम

रुष बुधि विवेक परमान॥हरत अखिल अघतरुन नर त
व तुलसी कछुजान१०॥जिन्हते उदभव दरविभव ब्रह्मादिक
संसार॥सुगति तासु तिन्हकी कृपा तुलसी वदहि विचार
११॥ससि रवि सीतारास नभ तुलसी उरसिप्रमान॥उ
दित सदा अथ वदनसो कुवलित तमकर ज्ञान१२॥तुल
सी कहत विचार गुरु रामसरिस नहिं आन॥जासु कृपा
सुचि होति रुचि विसद विवेक प्रमान१३॥रारस रूपअनू
प अल हरत सकल मलसूल॥तुलसी मर्महि योगलहि उ
पजत सुख अनुकूल१४॥रेफरामित परमातमा सह अकार सि
य रूप॥दीरघ मिलि विधि जीवइव तुलसी अमल अनू
प१५॥अनुस्वार कारन जगत धीकर करन अकार॥मिलत अ
कार मकारसो तुलसी हरदातार१६॥ज्ञान विराग भक्ति सह
मूरति तुलसी पेषि॥वरनत गति मति अनुहरत महिमा
विसद विसेषि१७॥नाममनोहर जानि जिय तुलसी करि प
रमान॥वरन विपर्जै भेदतें कहो सकल सुभजान१८॥तुल
सी सुभकारन समुझि गहत रामरसनाम॥असुभ हरन सु
चि सुभकरन भक्ति ज्ञान गुनधाम१९॥तुलसी राम समान
वर सपनेहु अपर नआन॥तासुभजन रति हीनअति वा
हसि गति परमान२०॥अहिर सनायन धेनुरस गणप
ति द्विज गुरुवार॥माधव सितसिय जनम तिथि सतसै
या औतार२१॥भरन हरन अति अमित विधि तत्व अर्थ
कविरीति॥संकेतिक सिद्धांतमत तुलसी वदन विनीति२२
॥विमल बोध कारन सुमति सतसैया सुख धाम॥गुरुमुख
पढि गतिपाइहैं विरति भक्ति अभिराम२३॥मनभय जर
सुतलाग युत प्रगट छंद यत होइ॥सोघटना सुभदा

सदा कहत सुकवि सबकोइ २६॥ जतसमान ततवान ल घु अपरबिंद गुरुमान॥ संजोगादि विकल्प पुनि पदन अंत कहजान २५॥ दीरघ लघु करि तहंपठव जहंमुखलहि विस्राम॥ प्राकृत अरट प्रभाव इह जनित बुधाबुध वाम। २३॥ दुइ गुरु सीता सार गण राम सोगुरु लघु होइ॥ लहुगु रु रमा प्रतक्ष गन जुगलहु हरगन सोइ २७॥ सहस नाम मुनि भनित सुनि तुलसी वल्लभ नाम॥ सकुचत्ति यह ह सि निरखि सिय धरम धुरंधर राम २८॥ दम्पति रस रसनाद सन परिजन वदन सुगेह॥ तुलसी हरहित वरन सिसु सं पति सरल सनेह २९॥ हिय निर्गुन नैनन सगुन रसना॰ रामसुनाम॥ मनहु पुरट संपुट लसन तुलसी ललित- ललाम॥ ३०॥ प्रभु गुनगन भूषन वसन वचन विसेष सुदेस॥ राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केस ३१॥ रघुवर कीरति सिय वदन इव कहै तुलसी दास॥ स रद प्रकास अकास छवि चारु चिबुक तिल जासु॥ ३२ तुलसी सोभत लषत गन सरद सुधाकर साथ॥ मुः क्ता कालर कलक जनु राम सुजस सिसु हाय॥ ३३॥ आतम मध्य विवेक विनु राम भजन अलसात॥ लो क सहित परलोककी अव सवि नासी वात॥ ३४॥ वरु मराल मानस तजै चंद सीत रवि धाम॥ मोर मदादिक जेौंतजै तुलसी तजै नराम॥ ३५॥ आसन दृढ आहार दृढ सुमति ज्ञान दृढ होय॥ तुलसी विना उपासना वि न दुलहेकी जोय ३६॥ रामचरन अवलम्ब विनु परमारथ की आस॥ चाहत वारिद बुंद गहि तुलसी चढन अका स ३७॥ रामनाम तरुमूल रस अरथधन फलएक॥ जुगल सं

त सुभ चारि जग वरनत निगम अनेक॥ ३८॥ राम काम तरु परिहरत सेवत कलि तरु ठूंठ॥ स्वारथ परमारथ चह त सकल मनोरथ कूंठ॥ ३९॥ तुलसी केवल कामना राम चरित आराम॥ लिसि चर कलि करि निहत तरु मोहि क हत विधि वास॥ ४०॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एकही वोर॥ द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर॥ ४१॥ हित सन हित रति राम सन रिपु सन वैर विहाव॥ उ दासीन संसार सन तुलसी सहज सुभाव॥ ४२॥ तिलपर राखे सकल जग विदित विलोकत लोग॥ तुलसी महिमा रामकी को जग जानन जोग॥ ४३॥ जहां राम तहं काम नहिं जहां काम नहिं राम॥ तुलसी कवहीं होत नहिं रवि रजनी इक ठाम॥ ४४॥ राम दूर माया प्रवल घटति जानि मन माहिं॥ वढति भूरि रवि दूरि लषि सिर पर पगु तर छाहिं॥ ४५॥ सम्पति सकल जगत्त की स्वासा सम नहिं होय॥ स्वास सोई तजि राम पद तुलसी अलगन खोय ४ ६॥ तुलसी सो अति चतुरता राम चरन लौलीन॥ परम न परधन हरन कहं गनिका परम प्रवीन॥ ४७॥ चतुराई चूल्हे परे जम गहि ज्ञानहि खाय॥ तुलसी प्रेम न राम पद सव जर मूल नसाय॥ ४८॥ प्रेम सरीर प्रपंच रुज उपजी वड़ी उपाधि॥ तुलसी भली सोवैदई वेगि वांधई व्याधि ॥ ४९॥ राम विरप तर विसद वर महिमा अगम अपार॥ जाकहं जहं लगि पहुंचहे ताकहं तहं लगि डार॥ ५०॥ ९ तुलसी कोसल राज भजु जनि चितवै कहु वोर॥ पूरन० राम मयंक मुख करु निज नयन चकोर॥ ५१॥ ऊंचे नी चे कहुं मिले हरिपद परम पियूष॥ तुलसी काम मयूषतें

लागे कौलेउ रूख॥५२॥स्वामी होनो सहजहै दुर्लभ हो नो दास॥गाडर लायै ऊनको लागी चरै कपास॥५३॥चलब नीति मग राम पद प्रेम निबाहब नीक॥तुलसी पहिरिये सोबसन जोनय बारल फीक॥५४॥तुलसी राम कृपालते कहि सुनाव गुन दोष॥होउ दूबरी दीनता परम पीन संतोष॥५५॥सुमिरन सेवन रामपद रामचरन पहिचान॥ऐसेहुं लाभन ललक मन तौतुलसी हितहान॥५६॥सब संगी बाधक भये साधक भए नकोइ॥तुलसी राम कृपालतें भलीहोय सोहोय॥५७॥तुलसी मिटैन कल्पना गये कल्पतरु छांहं॥जबलगि द्रवै नकरि कृपा जनक सुताको नांह॥५८॥बिमल बिलग सुख निकट दुख जीवन समै सुरीति॥रहित राखिये रामकी तजेतँब चित अनीति॥५९॥जाय कहब करतूति विनु जाय जोग बिन छेम॥तुलसी जाय उपाय सब बिना राम पद प्रेम॥६०॥तुलसी रामहि परिहरे निपट हानि सुनु मोद॥जिमि सुरसरि गत सलिल वर सुरा सरिस गंगोद॥६१॥हरे चरहिं तापहिं वरे फरे पसारहिं हाथ॥तुलसी स्वारथ मीत जग परमारथ रघुनाथ॥६२॥तुलसी खोटे दासकर राखत रघुबर मान॥ज्यों सरबस पूरोहि तहि देत दान जजमान॥६३॥ ज्यों जग बैरी मीन को आपु सहित परिवार॥ त्यों तुलसी रघुनाथ बिन आपन दसा बिचार॥६४॥ तुलसी राम भरोस सिर लि[illegible] पाप धरि मोट॥ ज्यों बिभिचारी नारि कहं बड़ी [illegible] वोट॥६५॥स्वामी सीता नाथ जी तुम लगि मे[illegible] [illegible]६॥ तुलसी लसी काग जहाज़ को सूकन और नठौर [illegible] [illegible]सिर पति साहै सब छल छांड़िके कीजे राम सने[illegible]

कहा जिन देखी सब देह॥६७॥सबही को परखे लखे बहु न कहे का होय॥तुलसी तेरो राम तजि हित जग औरो नकोय॥६८॥तुलसी हमसें रामसें भलो मिलोहै सूत॥ छाड़े वने नसंग्रहे ज्यों घर माहं कपूत॥६९॥कोटि विघ्न संकट बिकट कोटि सत्रु जो साथ॥तुलसी वल नहिं करि सके जो सुदृष्ट रघुनाथ॥७०॥लगन महूरत जोग वल तुलसी गनत नकाहि॥राम भये जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि॥७१॥प्रभु प्रभुता जाकहँ दई वोल मुहित माहि बाँह॥तुलसी तेराजत फिरहिं राम छत्र की छाँह॥७२॥साधन साँसति सब सहन सुमन सुखद फल लाहु॥तुलसी चातक जलदकी रीकि वूकि बुध काहु॥७३॥चातक जीवन जलद कह जानत समय सुरीति॥लखत लखत लखि परतहै तुलसी प्रेम प्रतीति॥७४॥जीव चरा चर जहँ लगे है सब को प्रिय मेह॥तुलसी चातकमन वसो घनसो सहज सनेह॥७५॥डोलत विपुल विहंग वन पियत पोषरी वारि॥सुजस धवल चातक नवल तोर भुवन दस चारि॥७६॥मुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर॥सुजस ललित चातक वलित रहो भुवन भरि तोर॥७७॥माँगत डोलत हैनहीँ तजि घर अनत नजात॥तुलसी चातक भक्त कीे उपमा देत लजात॥७८॥तुलसी तीनो लोक महं दूसरे ही को माथ॥सुनियत जासु नदीनता किये चानि॥ जाँ ७९॥प्रीति पपीहा पयद की प्रगट नई पहि॥८०॥ ऊँची जान गगन अधीन इन किये कनोड़ा दान पीहरा नीचो पियत नजीर॥८१॥

जाँचै घनस्याम सों कै दुख सहै सरीर॥८१॥ कै बरषै घ
न समय सिर कै भरि जनम निरास॥ तुलसी चातक जा
चकहिं तऊ तिहारी आस॥८२॥ चढ़त न चातक चित कब
हूं प्रिय पयोद के दोष॥ ताते प्रेम पयोधि बर तुलसी जोग
न दोष॥८३॥ तुलसी चातक माँगनो एक एक घन दानि॥
देत सो भू भाजन भरत लेत घूट भरि पानि॥८४॥ होय
अधीन जाचत नहीं सीस नाय नहिं लेय॥ ऐसे मानी
माँगना नहिं को बारिद बिन देय॥८५॥ पबि पाहन दामि
नि गरज झरि झकोर खर खीझि॥ दोष न प्रीतम दोष ल
खि तुलसी रागहि रीझि॥८६॥ कौन जियाये जगत मं
हं जीवन दायक पानि॥ भयो कनौड़ो चातकहिं
पयद प्रेम पहिचानि॥८७॥ मान राखिबो माँगिबो
पिय सों सहज सनेह॥ तुलसी तीनो तब फबै जब
चातक मत लेह॥८८॥ तुलसी चातक ही फबै मान
राखिबो प्रेम॥ बक्र बूंद लखि स्वाति को निदरि निबा
हत नेम॥८९॥ उपल बरषि गरजत तरजि डारत कु
लिस कठोर॥ चितव कि चातक जलद तजि कबहूं
आन की ओर॥९०॥ बरषि परुष पाहन जलद पक्ष क
रै टूक टूक॥ तुलसी तदपि न चाहिये चतुर चातकहि
चूक॥९१॥ रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गो अंग
॥ तुलसी चातक के हिये नित नूतन हित रंग॥९२॥
गंगा जमुना सरस्वती सात सिंधु भरिपूर॥ तुलसी
चातक के मते बिन स्वाती सब धूर॥९३॥ तुलसी चा
तक के मते स्वाती पियत निपानि॥ प्रेम तृषा बढ़नी

तजै स्वाती सुधि नहिं लेइ॥ तुलसी सेवक वस क
हा जो साहेब नहिं देइ॥ ९५॥ आस पपीहा पयद की
सुनु हो तुलसी दास॥ जो अँचवै जल स्वाति को परि
हरि बारह मास॥ ९६॥ चातक घन तजि दूसरे जि
यत न नाई नारि॥ मरत नमाँगे अर्ध जल सुर सरि
हू को वारि॥ ९७॥ व्याधा बधो पपीहरा परो गंग ज
ल जाय॥ चोंच मूंदि पीवै नहीं धिगपि बनो प्रन जा
यु॥ ९८॥ बधिक बधो परि पुन्य जल उपर उठाई
चोंच॥ तुलसी चातक प्रेम पट मरत नलायो खोंच
॥ ९९॥ चातक सुतहि सिखाव नित आन नीर जनि
लेहु॥ ए हमरे कुल को धरम एक स्वाति सों नेह
॥ १००॥ दरसन परसन आन जल बिनु स्वाती सुनु
तात॥ सुनत चेचुवा चित चुभो समुझि नीति वर
वात॥ १०१॥ तुलसी सुतसे कहत हैं चातक वारंवार
॥ तात न तरपन कीजियो बिना वारि धर वारि॥ १०२
बाजे चंगु गत चातकहि भई प्रेमकी पीर॥ तुलसी-
पर वस हाड मम परिहैं पुहुमीनीर॥ १०३॥ अंडु फोरि
किय चेचुवा तुष परोनी हार॥ गहि चंगुल चातक
चतुर डास्यो बाहिर वारि॥ १०४॥ होय न चातक पात
की जीवन दानिन मूढ़॥ तुलसी गति प्रहलाद की
समुझि प्रेम पद गूढ़॥ १०५॥ तुलसी के मत चातक
हि केवल प्रेम पियास॥ पियत स्वाति जल जान ज
ग तावत बारह मास॥ १०६॥ एक भरोसो एक बल
एक आस बिस्वास॥ स्वाति सलिल रघुनाथ वर चा
तक तुलसी दास॥ १०७॥ आल बाल मुक्ता हलनि ९

हिय सनेह तरु मूल॥ हेरु हेरु चित चातकहि स्वाति सलिल अनुकूल॥१०८॥ राम प्रेम बिन दूबरो राम प्रेम सह पीन॥ विसद सलिल सरवर बरन जन तुलसी मन मीन॥१०९॥ आप बधिक वर वेष धरि कहें कुरंगम राग॥ तुलसी जौं मृग मन मुरै परै प्रेम पट दाग॥११०॥ इति श्री मद्गोसांई तुलसी दास विरचितायां सप्त शतिकायां प्रेम भक्ति निर्देशो प्रथमः सर्गः॥१॥ ॥खेलत बालक व्याल संग पावक मेलत हाथ॥ तुलसी सिसु पितु मातु इव राखत सिय रघुनाथ॥१॥ तुलसी के बल राम पद लागो सरल सनेह॥ तो घर घट वन बाट महं कतहुं रहै किन देह॥२॥ कै ममता करु रामपद कै ममता करु हेल॥ तुलसी दो महं एक अब खेल छाडि छल खेल॥३॥ कै तोहि लागहि राम प्रिय कै तु राम प्रिय होहि॥ दुइ महं उचित सुगम समुझि तुलसी करतव तोहि॥४॥ राव नारि के दास संग कायर चलहिं कुचाल॥ खरदूषन मारीच सम भल भये बस काल॥५॥ तुलसी पति दरबार महं कमी वस्तु कछु नाहिं॥ कर्म हीन कलपत फिरत चूक चाकरी माहिं॥६॥ राम गरीब नेवाज हैं राज देत जन जानि॥ तुलसी मन परिहरत नहिं घुर बिनिया की बानि॥७॥ घर कीन्हे घर होत है घर छाडे घर जाय॥ तुलसी घर वन बीचही रहो प्रेमपुर छाय॥८॥ राम राम रटिबो भलो तुलसी खता न खाय॥ लरिकाई ते पैरिबो धोखे बूडि न जाय॥९॥ तुलसी बिलम न कीजिये भजि लीजें रघुवीर॥ तन तरकस ते जातहैं स्वास सारस

तीर॥१०॥राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भये कु
जाति॥कुतरु कुसुर पुर राज बन लहत भुवन वि
ख्याति॥११॥नाम महातम साषि सुनु नरकी केति
क बात॥सरवर पर गिरिवर तरे ज्यौं तरुवर के पा
त॥१२॥ज्ञान गरीबी गुन धरम नरम बचन नि
रमोष॥तुलसी कबहु न छांड़िये सील सत्य संतो
ष॥१३॥असन बसन सुत नारि सुख पापिहु के घर
होइ॥संत समागम राम धन तुलसी दुर्लभ दो
इ॥१४॥तुलसी तीरहि के बसे अवसि पाइये था
ह॥बेगाहि जाय न पाइये खर सरिता अवगाह॥१५
॥डग अंतर मग अगम जल जल निधि जल सं
चार॥तुलसी करिया करम बस बूड़त तरत नवार
॥१६॥तुलसी हरि अपमान तें होत अकाज समाज
॥राज करत रज मिलि गये सदल सकुल कुरु रा
ज॥१७॥तुलसी मीठे बचन तें सुख उपजत चहुँ वो
र॥वसी करन यक मंत्र है परिहरु बचन कठोर॥
१८॥राम कृपा तें होत सुख राम कृपा बिन जात॥जा
नत रघुबर भजन तें तुलसी सठ अलसात॥१९॥
सनमुख ह्वै रघुनाथ के देह सकल जग पीठि॥त
जे केंचुरी उरग कहँ होत अधिक अति डीठि॥२०
॥मरजादा इनहि रहै तुलसी किये बिचार॥निकट
निरादर होत है जिमि खर सरि वर वारि॥२१॥राम
कृपा निधि स्वामि मम सब विधि पूरन काम॥प
रमारथ [illegible] सघट चल धाम॥२२॥

तुलसी राम अजान नर किमि पावहिं परधाम॥२३॥
तुलसी पति रति अंक सम सकल साधना सून॥
अंक रहित कछु होय नहिं सहित अंक दस गु
न॥२४॥ तुलसी अपने राम कहँ भजन करहु इक अं
क॥ आदि अंत निरवाहि वो जैसे नव को अंक॥२५
॥ दुगुने तिगुने चौगुने पंच षट औ सात॥ आठोंते
पुनि नौगुने नौके नौ रहि जात॥२६॥ नौके नौ रहि
जात हैं तुलसी किए बिचार॥ त्यों राम इम जगत
में नहीं हैत विस्तार॥२७॥ तुलसी राम सनेह कर
त्यागु सकल उपचार॥ जैसे घटत न अंक नौ न
व के लिखत पहार॥२८॥ अंक अगुन आखर सगुन
समुझउ से प्रकार॥ पांय राख आप भल तुलसी
चारु विचार॥२९॥ येहि विधि ते सब राम मय स
मुझहु सुमति निधान॥ यातें सकल विरोध तजु
भजु सब समुझु नआन॥३०॥ राम काम नाहीं न
पुनि सकल काम करतार॥ याहीते परमातमा अ
व्यय अमल उदार॥३१॥ जो कछु चाहत सो करत
हरत भरत गत भेद॥ काहु सुखद काहू दुखद जान
तहैं बुध वेद॥३२॥ संत कमल मधु मास कर तुल
सी वरन विचार॥ जग सरवर तर भरन कर जानहु
जल दातार॥३३॥ एक रूपमहँ जाहि विधि प्रगा
ट तीन तर भेद॥ सात्विक राजस तम सहित जानत
हैं बुध वेद॥३४॥ ताविधि रघुवर नाम महँ वर्त्त
मान गुन तीन॥ चंद भानु अपि अमल विधि ह
रि हर कहहिं प्रवीन॥३५॥ अनल रकार अकार

रवि जानु सकार मयंक ॥ हरि अकार रकार विधि मःमहेस निःसंक ॥ ३६ ॥ बनन ज्ञान कह दहनः कर अनल प्रचंड रकार ॥ हरि अकार हर मोह तम तुलसी कहहिं विचार ॥ ३७ ॥ त्रिविधि ताप हर ससिः सतर जानहु मरम मकार ॥ विधि हरिहर गुन तीनि को तुलसी नाम अधार ॥ ३८ ॥ भानु कसानु मयंक को कारन रघुवर नाम ॥ विधि हरि संभु सिरोमनी प्रनत सकल सुख धाम ॥ ३९ ॥ अगुन अनूपम सगुन निधि तुलसी जानत राम ॥ करता सकल जगतको भरना सब मन काम ॥ ४० छत्र मुकुट समः विदि अल तुलसी जुगल हलंत ॥ सकल बरन सिरपर रहत महिमा अमल अनंत ॥ ४१ ॥ रामानुज म रगुन विमल स्याम राम अनुहार ॥ भरना भरत सो जगत को तुलसी लसत अकार ॥ ४२ राजत राजस तानु जब वर धरनी धर धीर ॥ विधि विहरत अति आसु करि तुलसी जन गन पीर ॥ ४३ ॥ हरन करन संकट सतर समर धीर बल धाम ॥ ममहेस अरि दवन वर लषन अनुज अरि काम ॥ ४४ ॥ राम सदा सम सील घर सुख सागर परधाम ॥ अजकारन अद्वैत नित समतर पद अभि राम ॥ ४५ ॥ होन हार सह जान सब विसौ वीच नहिं होत ॥ गगान गिरह करि बो कवै तुलसी पढ़त कपोत ॥ ४६ ॥ तुलसी होत सिखन हित तन गुन दूषन धाम ॥ भषन सिखिन कवने काहौ प्रगट विलारह काम ॥ ४७ ॥ गिरत अंड संपुट अरुन जग लग पस अनयास ॥ अनल

सुवत उपदेस केहि जातसु उलटि अकास॥४८॥
विविधि चित्र जल पत्र विच अधिक नून सम स्त्र
॥कव कौने तुलसी रचे केहि विधि पक्षस यूर॥
४९॥ काक सुता ग्रह नाकरे यह अचरज वड वाय
॥तुलसी कहि उपदेस सुनि जनित पिता घर जा
य॥५०॥ सुपय कुपय लीन्हे जनित स्वस्व भाव
अनुसार॥ तुलसी सिखवत नाहि सिसु मूक कह
न न मजार॥५१॥ तुलसी जानत है सकल चेत
न मिलत अचेत॥ कीट जात उड़ि तिय निकट
बिनहि पढे रति देत॥५२॥ होन हार सब अपु
तें वृथा सोच कर जौन॥ कंज भृंग तुलसी स्व
गत कहहु अमेटन कौन॥५३॥ सुख चाहत सु
ख में वसत है सुख रूप बिसाल॥ संतत जा विधि
मानसर कबहु न तजत मराल॥५४॥ नीति प्री
ति जस अजस गति सब कहँ सुभ पहिचान॥
वस्ती हस्ती हस्तिनी देत नपति रति दान॥५५॥तु
लसी अपने दुषद तें कोकहु रहत अजान॥कोस
कुंत अंकुर बनहि उपजत करत निदान॥५६॥
जथा धरनि सब बीजमें नषत अकास निवास
॥तथा राम सबधर्म मय जानत तुलसी दास॥५
७॥पुहुमी पानी पावकहु पवनहु मांह समात॥
ताकहं जानत राम अपि बिनु गुरु किमि लखि
जात॥५८॥ अगुन ब्रह्म तुलसी सोई सगुन विलो
कन सोइ॥ दुख सुख नाना भाँति को तेहि विरोध
तें होइ॥६०॥ सूरज थागन जीति अरि पलटि आ

व चलि गेह॥ तिमि गति जानहि रामकी तुलसी संत सनेह॥ ६०॥ परमातम पद राम पुनि तीजे संत सुजान॥ जे जग महं विचरहि धरे देह विगत अभिमान॥ ६१॥ चौथी संज्ञा जीवकी सदा रहत रतकाम॥ ब्रह्मन संतन राम पद निसि वासर वस वाम॥ ६२॥ सुख पाये हरषत हंसत खीकत लहे बिषाद॥ प्रगटत दुरत निरे परत केवल रत विस्वाद॥ ६३॥ नाना विध की कल्पना नाना विधि को सोग॥ सूक्षम औ अस्थूल तन कबहुं तजत नहिं रोग॥ ६४॥ जैसे कुष्टी की सदा गलित रहत दोउ देह॥ विदहू की गति तैसिये अंतरहू गति एह॥ ६५॥ त्रिधा देह गति एक विधि कबहूं नागति आन॥ विविधि कष्ट पावत सदा निरखहिं संत सुजान॥ ६६॥ रामहिं जाने संतबर संतहि राम अमान॥ संतन केवल राम प्रभु रामहिं संत नआन॥ ६७॥ तातें संत दयाल वर देहिं राम धन रीति॥ तुलसी यह जियजानिके करियत हठि अति प्रीति॥ ६८॥ तुलसी संत सुअंब तरु फूलि फरहिं परहेतु॥ इतते वे पाहन हने उतते वे फल देत॥ ६९॥ दुख सुख दोनों धक सम संतनके मन माहिं॥ मेरु उदधि गति कूर जिमि भार भौंजिबो नाहिं॥ ७०॥ तुलसी राम सुजान को गम जनावे सोइ॥ रामहि जाने रामजन आन कबहुं नहोइ॥ ७१॥ सोगुरु राम सुजान सम नहीं विममता लेस॥ ताकी कृपा क

दासतें रहैन कठिन कलेस॥७२॥गुरु कह तव समझै सुनै निज कारतव करभोग॥कहतव गुरु करतव करे मिटै सकल भव सोग॥७३॥ सरना गल तेहि रामके जिन्ह दिय धीसियरूप ॥जापद्नी घर उदय भय नासै भ्रम तम कूप ॥७४॥जापद पाये पाइये आनंदपद उपदेस॥सं से समन नसाय सब पावै पुनि न कलेस॥७५ ॥मेधा सीता सम समुझ गुरु विवेक सम राम॥तु लसी सिय सम सो सदा भयो विगत मगवा म॥७६॥आदि मध्य अवसान गति तुलसी एक समान॥तेई संत सरूप सुभ जे अतीत ३ वाति आन॥७७॥एई सुद्ध उपासना परा भक्तिकी रीति॥तुलसी यहि मग पगु धरे रहे रामपद प्री ति॥७८॥तुलसी विन गुरु देवके किमि जाने क हु कोय॥ जहंते जो आयो सोई जाय जहां है सोय॥७९॥ अप गतये सोई अवनि सोपुनि प्र गट पताल॥कहो जनम अपि मरन मपि समु कहि सुमति रसाल॥८०॥संग दोस तेभेद अ स मधु मदि राम करंद॥गुरु रामते देखहिं प्र गट पूरन परमा नंद॥८१॥द्वावर सागर कूप गत भेद दिखाई देत॥है एकै दूजे नहीं हैत आन१ के हेत॥८२॥गुन गत नाना भांति तेहि प्रग- टत कालहिं पाय॥जान जाय गुरु ज्ञानते वि न जाने भरमाय॥८३॥तुलसी तरु फलत फ लत जाविधि कालहि पाय॥ तैसे ही गुन दोष

तें प्रगटत सबै सुभाय॥८४॥ दोषहु गुनकी री
ति इह जानु अनल गति देषि॥ तुलसी जानत
सो सदा जेहि विवेक सुविसेषि॥ ८५॥ गुरु ते
आवत ज्ञानवर नासत सकल विकार॥ जथा
निले गति दीपकै मिटत सकल अंधियार॥
८६॥ जद्यपि अवनि अनेक सुख तोयतामु रस
ताल॥ संतत तुलसी मानसर तदपि नतजहिं म
राल॥ ८७॥ तुलसी तोरत तीर तरु मानस जहं स
विहार॥ विगत नलिनि अलि मलिन जल सर
सरिहू वढ़िवार॥ ८८॥ जोजल जीवन जगत को
परसत पावन जौन॥ तुलसी सो नीचे ढरत ता
हि नेवारत कौन॥ ८९॥ जोकरता है करम को
सो भोगत नहिं आन॥ ववन हार लुनिहै सो
ई देनी लहै निदान॥ ९०॥ रावन रावन कौह
न्यो दोस रामकहं नाहिं॥ निज हित अनहित
देखु किन तुलसी आपहि माहिं॥ ९१॥ सुमिरु
राम भजु रामपद देखु राम सुनु राम॥ तुलसी
समुझहु राम कहं अहनिस इह तव काम॥
९२॥ रज आप अनल अनिल नभ जड़ जानत स
व कोइ॥ इह चेतन्य सदा समुक कारज र
न दुष होइ॥ ९३॥ निज कृत विलसत सो स
दा विन पाये उपदेस॥ गुरु पगु पाय सुमग
धरे तुलसी हरै कलेस॥ ९४॥ सलिल शुक्र श्रो
णित समुक पल अरु अस्थि समेत॥ वाल कु
मारजु वाजरा हैसो समुक कब चेत॥ ९५॥ ऐ

सिहि गति अवसानकी तुलसी जानतहेन ॥ ता
ते यह गति जानि जिय अवि रलहारे चित चेन
॥९६॥ जाने राम स्वरूप जब तवपावे पद संत
॥ जन्म मरन पदते रहित सुषमा अमल अनं
त ॥९७॥ दुखदायक जाने भले सुख दायक भ
जि राम ॥ अब हमको संसार को सबविधि पू
रन काम ॥९८॥ आपुहि मदको पानकरि आ
पुहि होत अचेत ॥ तुलसी विविध प्रकार को
दुख उतपति यहि हेत ॥९९॥ जासों करत वि
रोध हठि कहु तुलसी कोआन ॥ सोतें समनन
आन तब नाहि कहो सिमलान १००॥ चाहसि
सुख जेहि मारिके सोतो मारि नजाय ॥ कौन
लाभ विषते वदलि ते तुलसी विषखाय ॥ १०२
॥ कोह द्रोह अघ मूलहे जानत कोकहु नाहि
॥ दया धर्म कारन समुझि कोदुष पावत नाहि
॥१०२ बनो बनायोहेसदा समुझ रहित नहिसूल
॥ अरुन बरन केहि कामको बासबिना कोफू
ल ॥१०३ इति श्री मद्गोसाईं तुलसी दास बिरचि
तायां सप्तसतिकायां उपासन पदा भक्ति निर्देसो
नाम द्वितीयः सर्गः ॥२॥ ॥२॥ ॥ जनक सु
ता दस जान सुत उरग ईस अस जोरि ॥ तुल
सिदास दसपद परखि भवसागर गयो थोरि
॥१॥ तुलसीतेरी रोग रवर तात मात गुरु देव ॥
ता नजि तोहि उचित अब रुचिर आन पद से
व ॥२॥ तर्क विसेषि निषेध पति उर मानसु

सुपुनीत ॥ बसन मराल रहित करि तेहि भ
नु पलटि बिनीत ॥ ३ ॥ सुक्रादिहि कल देहु इक
अंत सहित सुख धाम ॥ दे कमला कल अंत को
मध्य सकल सुख दाम ॥ ४ ॥ बीज धनंजय रवि
सहित तुलसी तथा मयंक ॥ प्रगटत हानहि
तमतमी सम चित रहत असंक ॥ ५ ॥ रंजन का
नन को कनद् बंस बिमल अवतंस ॥ गंजन पुरहूत
अरि सदल जग हित मान सहंस ॥ ६ ॥ जग तें
रहु छत्तीस होय राम चरन छत्तीन ॥ तुलसी दे
खु बिचारि हिय है यह मतो प्रवीन ॥ ७ ॥ कंदि
गइनन रुच हनि गनी अनुज तेहि कीन्ह ॥
जेहि हरि करमनि मान हनि तुलसी तेहि प
द लीन्ह ॥ ८ ॥ सिला आसु मोचक बरन हरन
सकल जंजाल ॥ भदन करन सुख सिद्धि नर तु
लसी परम कृपाल ॥ ९ ॥ मरन बिपति हर धर
धरम धरा धरन बल धाम ॥ सरन तासु तुल
सी चहत बरन अविरल अभि राम ॥ १० ॥ बिहं
ग बिरंचि तनि तय पति पति तुलसी तोर ॥
ता सवि सुख सुख अति विसम सपनेहु होत न
भोर ॥ ११ ॥ तृतिय कोल राजिव प्रथम बाहुन
निश्चयसाहि ॥ आदि एक कलदे भजहु वेद वि
दित गुन नाहि ॥ १२ ॥ बसत जहां राघव जल
ज तेहि मितिवो जहि संग ॥ भजु तुलसी
तेहि अरि सुपद करि उर प्रेम अभंग ॥ १३ ॥
भजहु तरनि और आदि कहें तुलसी आस

ज अंन ॥ पंचानन लहि पदम मथि गहे विमल
मन संत ॥ १४ ॥ वनिता सैल सुता सको तासु
जनमको ठाम ॥ तेहि भजु तुलसी दास हित प्रन
त सकल सुख धाम ॥ १५ ॥ भजु पतंग सुत
आदि कहं स्रस्तुं जय आदि अंतु ॥ तुलसी पुहु क
र जन्नु कर बरन पांसु मिरछंतु ॥ १६ ॥ उलटे ता
सीता सुपति सोह जार मन मध्य ॥ एक सूनर
थ तनै कहं भजसि नमन समरथ्थ ॥ १७ ॥ द्वि
तिय तृतिय हर काम नहिं भजु तेहि तुलसी
दास ॥ काकासन आसन किये सासन लहे
उपास ॥ १८ ॥ आदि द्वितिय औतार कहं भजु
तुलसी नप अंत ॥ कमल प्रथम अरु मध्य
सह वेद विदित मत संत ॥ १९ ॥ जेहि नगत्यो
कछु मान सह सुरपति अरि मो आस ॥ तेहि
पद सुचिता अवधि भव तेहि भजु तुलसीदास
॥ २० ॥ नैन करन गुन धरन वर लावर वरन वि
चार ॥ चरन सतर तुलसी चहसि उबरन सरन
अधार ॥ २१ ॥ भजु हरि आदिहि वाटिका भरित
राजिव अंत ॥ कविता पद बिस्वास भव सरिता तरसि तुरंत ॥
२२ ॥ जड़ मोहन वर नादि कहं सह चंचल चित चेत ॥
भजु तुलसी संसार अहि नहि गहि करत अचेत ॥
२३ ॥ मरन अधिप वाहन वरन दूसर अंत अगार ॥ २
तुलसी दसु सह राम धर तारन तरन अधार ॥ २४ ॥
जौं उर विज चाहसि कटित तौकारि धटित उपाय ॥
सुमन सवर वर अरि चरन सेवत सरल सुभाय।

॥२५॥द्वितिय पयोधर परम धन बारा अंत जुत सोय॥ भजु तुलसी संसार हित यातें अधिक न कोय॥२६॥पति पयोधि पावन पवन तुलसी करहु विचार॥ आदि द्वितिय अरु अंत जुत नामत नव निरधार॥२७॥हंस कपट रस सहित गुन अंत आदि प्रथमंत॥भजु तुलसी तजि बास गति जेहि पद रत भगवंत॥२८॥करुनासमुकिक बरन हरहु अंत आदि जुत तार॥ श्री करतम हर बरन वर तुलसी सरन उबार॥२९॥ अंक दसा रस आदि जुत पांडु सूनु सह अंत॥ जानि सुवन सेवक सतर करिहै कृपा परंत॥३०॥ कटति सरवाहि विचारि हिय आदि बरन हर एक॥ अंत प्रथम स्वरदि भजहु जागर तत्त्व विवेक॥३१॥ आदि चन्द्रचल सहित भजु तुलसी तजु काम॥ अघ गंजन रंजन सुजन भव भंजन सुख धाम॥३२॥ विगति देह तनु जासु पति पद रति सहित सनेम॥ जदि अंति मनि चाहसि सुगति तदि तुलसी करु प्रेम॥३३॥करता सुचि सुरसर सुता ससि सारंग महि जान॥ आदि अंत सह प्रथम युत तुलसी समुझु न आन॥ ३४॥ गिरिजा पति कल आदि द्वक हरि नछत्र जुधि जान॥ आदि अंन भजु अंत पुनि तुलसी सुचि मन मान॥३५॥ रितु पति पद पुनि पदिक जुत प्रथम आदि पुरलहु॥ अंत हरन

पद तृतिय महं मध्य बरन सह नेहु॥३६॥ बाहन मेष सुमधु पद भरत नगर जुत जान॥ हरि भगि सरित विपर्ज करि आदि मध्य अवसान॥३७॥ तुलसी उड़ुगन को बरन बनज सहित दोउ अंत॥ ताकहं भजु संसै समन रहित एक कल अंत॥३८॥ बारिज बारिज बरन बर बरनत तुलसी दास॥ आदि आदि भजु आदि पद पाये परम प्रकास॥३९॥ भजु तुलसी कुलि संतकहं सह अगार तजि काम॥ सुख सागर नागर ललित वली अली परधाम॥४०॥ चंचल सहित नर चंचला अंत अंत जुत जान॥ संत शास्त्र सं मत समुझि तुलसी कह परमान॥४१॥ आदि वसंत हकार है आसै तासु विचार॥ तुलसी तासु सरन परे कासु न अथी उबार॥४२॥ धराधर धर बरन जुग सरन हरन भव भार॥ करन सतर तर परम पद तुलसी परमाधार॥४३॥ बरन धनंजय मूलपति चरन सरन रति नाहिं॥ तुलसी जग बंचक विहटि किये विधाना ताहि॥४४॥ तुलसी रजनी पूर्णिमा हार सहित लखि लेहु॥ आदि अंत जुत जानि कहि तुलतर मनल सनेहु॥४५॥ भानु गोत्र तिमि तासु पति कारन अति हिति जाहि॥ ज्ञान सुगति जुत सुखसदन तुलसी मानत नाहि॥४६॥ भजु तुलसी औघादि कहं सहित तत्व जुत अंत भवा युजंय जासु बल मन चल अचल करं

त॥४७॥देत कहा नृप काजपर लेत कहा रत राज॥ अंत आदि युत सहित भजु जौंचाहसि सुभ काज॥४८॥चंद्रबदनि भजु गुन सहित समुझि अंत अनुराग॥ तुलसी जौं यह सजप है तौतव पूरन भाग॥४९॥जिनके हरिवाहन नहीं दधि सुत सुत जेहि नाहिं॥तुलसी तनर तुच्छ हैं बिना समीर उड़ाहिं॥५०॥रबि चंचल अरु वृक्ष द्रव बीच सुबास बिचारि॥ तुलसि दास आसन करे अवनि सुता उर धारि॥५१॥वन वनिता हगकोपमा जुत करु सहित विवेक॥ अंत आदि तुलसी भजहु धरि हरि सनकर टेक॥५२॥अवौ अंतहु आदि जुत कुल सों भीर कमलादि॥कै विपजे ऐसेहि भजहु तुलसी स मन विषाद॥५३॥तौ तोहि कहु सब काज सुख है करहि कहा तव पांच॥हरव तृतिय वारिज-वदन तजव लीन सुनु सांच॥५४॥तजहु सदा सुभ आस अरि भजु सुमनस अरि काल॥स जुमत ईस अवंतिका तुलसी विमल विसाल॥ ५५॥एतवंत वर वरन जुग सेत जगत सब जान॥वेत सहित सुमिरन करत हरत सकल अघ खान॥५६॥मैत्री वरलय कार को सहस र आदि बिचारि॥ पच वग गहि युत सहित तुलसी ताहि संभारि॥५७॥हलय मसध्य समान युत याले अधिक नजान॥तुलसी ताहि बिसारि सठ भरमत फिरत भुलान॥५८॥कौन जाति सीता

सती को दुखदायक दुवाम॥ को कहिये ससिक
र दुखद सुखदायक को राम॥५९॥ को शंकर गं
गुर वागा वर शिव हरको अभिमान॥ कर:
ताको अज जगत को भरता को हरि जान॥
६०॥ सरचेय सराजीव गुन करु तेहि हद प
हिचान॥ पंच पवर्गहि गुन सहित तुलसी ता
हि समान॥६१॥ होत हरष को पाय धन विप
ति नजे का धाम॥ दुखदा कुमति कुनारि तर:
अति सुखदायक राम॥६२॥ वीर कवन सहम
दन सर धीरकवन रतराम॥ कवन कूर हरिप
द विमुख कोकामी वसवाम॥६३॥ कारन को
कंजीवको खंगुन कह सव कोय॥ जानतको तु
लसी कहत सो पुनि आवन होय॥६४॥ तुल
सी वरन विकल्प को औचप त्रितिय समेत॥
अव समुकै जद सरित नर समुकै साधु संचे
त॥६५॥ जासु आसु सरदेव को अरु आसन:
हरवास॥ सकलदुखद तुलसी तजहु मध्य ता
सु सुखधाम॥६६॥ चंचल तिय भजु प्रथम हरि
जो चाहसि परधाम॥ तुलसी कहहि सुजन
सुनहु यही सयानप काम॥६७॥ कुलिस धर्म
जुगा अंत जुत भजु तुलसी तजु काम॥ असुभ
हरन संसय समन सकल कला गुन धाम
॥६८॥ श्रीकर को रघुनाथ हर अनयस कह
सब कोय॥ सुखदा को जानत सुमति तुलसी
समता होय॥६९॥ वैर मूल हित हरवचन प्रेम

मूल उपकार॥ दोहा सबल सनेहमें तुलसी करे विचार॥७०॥ प्राग रूवन गुरु लघु जगत तुलसी अवर नश्रान॥ येघाको हरिभक्ति सम एको लघु लोभ समान॥७१॥ बरन द्वितिय नासक मिरे तुलसी अंतरसार॥ भजहु सकल श्री कर सदन जनपालक खलमार॥७२॥ चप श्रेथ स स्वर सहित गुनिय भजुत हुषद नश्रान॥ तुलसी हल जुनते कुसल अंतिकार सहजान॥७३॥ तुलसी यमगन चोधवित्त कहु कि मि मिटें कलेस॥ ताते सद्गुरु सरन गह जाते पद उपदेस॥७४॥ भगत जगत कासी करसि राम अपन नहिं कोय॥ तुलसी पति पहिचान बिन कोउ तुल कबहु नहोय॥७५॥ तुलसी तगत विहीन नर सदा नगतके बीच॥ तिनहि जगत कैसे लहैं परे सगत के कीच॥७६॥ दनु रवनि सुर देव ऋषि रुक्मिनि पति सुभ जान॥ भोजन हुहिलो काक अलि आनंद असुभ समान॥७७॥ कोहित संत अहित कुटिल नासक को हित लोभ॥ पोषक तोषक दुखद अरि सोखक तुलसी छोभ॥७८॥ सदा नगुन पद प्रीति जेहि जासु नगन सम नाहि॥ जगनताहि नय गुनरहत तुलसी संसै नाहि॥७९॥ भगत भक्ति कह भरम तजि तगत सगन विधि होय॥ सगल सुभाय समुझि तजो भजनहु यन कोय॥८०॥ श्री राज आसन जूतजु १

विहरत तीरसु धीर॥ जल पाय मैदान पद रा
जत श्रीरघुवीर॥ ८१॥ बाल द्युत तूतट निकट
विहरत राम सुजान॥ तुलसी कर कमलन ललित
लसत सरासनवाल॥ ८२॥ मृदु मेचक सिरुह रु
चिर सीस तिलक भ्रूवंक॥ धनुसर गहि जनु त
हितजुत तुलसी लसत मयंक॥ ८३॥ हंस कमल
विच बरन जुत तुलसी अति प्रिय जाहि॥ तीन
लोक महं जोभजै लहै तासुफल ताहि॥ ८४॥
आदि महै अंतहु महै मध्यरहै तेहि जान॥ अन
जानै जड़ जीव सब समुझैं संत सुजान॥ ८५॥
आदि रहै मध्ये रहै अंत रहै सोवान॥ राम बिमुख
के होतहै राम विमुखते जात॥ ८६॥ ललित चरन
कटिकर ललित लसत ललित वनमाल॥ ललित वि
वुक द्विज अधर सह लोचन ललित बिसाल
८७॥ भरन हरन अर्थे अमल सहित विकल्प
विचार॥ कह तुलसी मति अनुहरत दोहा अर्थ
अपार॥ ८८॥ वसिष्ठा दौ अलंकार महं संकेता
दि सुरीति॥ कहे वहुरि आगे कहव समुझव सु
मति विनीति॥ ८९॥ कोस अलंकृत संधि गति
मैत्री वरन विचार॥ हरन भरन सुविभक्ति भ
ल कविहि अर्थ निरधार॥ ९०॥ देशकाल कर
ता करम वुधि विद्या गतिहीन॥ तेसुर तरुतर
दारदी सुरसरि तीर मलीन॥ ९१॥ देस काल
गति हीनजे करता करम नज्ञान॥ तेपिसर्थ
मग पगु धरहिं तुलसी स्वान समान॥ ९२॥ अ

धिकारी सब बोसरी भलो जानिबो मंद॥सुधा सदन वसु वार हो चौथी अथवा चंद॥९३॥नर वर नभ सर वर सलिल बिनै बनज बिज्ञान॥सुमति सुक्तिका सारदा स्वाती कहहिं सुजान॥९४॥समदम समता दीनता दान दयादिक रीत॥दोष दुरित हर दर दरउ रवर्षि विमल विनीत॥९५॥धरम धुरीन सुधीर धर धारनवर परपीर॥धरा धरा धर सम अचल बचल नविचल सुधीर॥९६॥चौंतिसके प्रस्तारमें अर्थ भेद परमान॥कहहु सुजन तुलसी कहहिं या विधि ले पहिचान॥९७॥वेद विसम कवरनस तर सुनर रामकी रीति॥तुलसी भरत नभरि हर्त भूलि हरहु जनि प्रीति॥९८॥वनते गुन कहूं जानिये तातें दगादिगतीन॥तुलसी यह जिय समुझि करि जग जित सत्त प्रबीन॥ चंद्र अनल नहि है कहूं झूठो विना विवेक॥तुलसी ते नर समुझि हैं जिनहि ज्ञान रसएक॥१००॥सतसैया तुलसी सतर तमहर पर परदेत॥दुरित अविद्या जन दुरित वर तुल सम करि लेत॥१०१॥इति श्री मद्गोसाईं जी तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिका यांसंकेत वक्रोक्ति राम रस वरननो नाम द्वितिय सर्गः॥२॥ ॥१०॥त्रिविधि भीति को सब्द वर बिघटन लट घर सान॥कारन अविरल अलपियत तुलसी अविध भुलान॥२॥दिग भ्रम जाविध होत है

कौन भुलावन ताहि॥ जानि परत गुरु ज्ञानतैं सब जग संसै माहिं॥२॥ कारन चारि विचार वर बरनन अपर न आन॥ सदा सोक गुन दोषमैं लखि न परत विन ज्ञान॥३॥ इह कारन सब ताहि को यहि ते यह परमान॥ तुलसी मरम न पाइहौ विन सद्गुरु वरदान॥४॥ दिग भ्रम कारन चार ते जानहि संत सुजान॥ तिनकै से लखि पाइहैं जे वहि विसम भुलान॥५॥ सुख दुख कारन सा भयो रसना को सुत वीर॥ तुलसी सोतव लखि परै करै कृपा वर धीर॥६॥ अपने खोदे कूप महं गिरे जथा दुख होइ॥ तुलसी सुखद समुझि हिये रचत जगत सब कोइ॥७॥ ताविधि ते अपनो विभौ दुखसुख देकरतार॥ तुलसी कोउ कोउ संतवर कीन्ह विरंचि विचार॥८॥ रसना हीके सुत अपर करत करन तर प्रीति॥ तेहि पाछे जग सब लगे समुझ नरीत अरीति॥९॥ माया मन जिउ ईस भनि ब्रह्मा विस्नु महेस॥ सुर देवी औ ब्रह्म लौं रसना सुत उपदेस॥१०॥ वरन धार वारिधि अगम को गम करै अपार॥ जन तुलसी सत संग बल पाये विसद विचार॥११॥ गहि सुबल विरले समुझि वहि गये अपर हजार॥ कोटि नबूडे खवरि नहिं तुलसी कहहिं विचार॥१२॥ श्रवन सुनत देखत नयन तुल तत विविधि विरोध॥ कहहु कही केहि मानिये केहि विधि

धि करिय प्रबोध॥१३॥ श्रवनात्मक ध्वन्यात्म
क वरनात्मक विधि तीन॥त्रिविध शब्द अनु
भव अगम तुलसी कहहिं प्रवीन॥१४॥कह
त सुनत आदिहि बरन देखत बरन विहीन॥
दिष्टि मान चर अचर गन एकहि एक नलीन
॥१५॥पंच भेद चर गन विपुल तुलसी कह
हिं विचारि॥नर पसु स्वेदज खग कमी बुध
जनमत निरधारि॥१६॥ अति विरोध तिनम
हँ प्रबल प्रगट परत पहिचान॥स्थावर गति
अपर नहिं तुलसी कहहिं प्रमान॥१७॥रोमरो
रोम ब्रह्मंड बहु देखत तुलसी दास॥बिन दे
खे कैसे कोऊ सुनि मानै बिश्वास॥१८॥ वे
द कहत जहँलगि जगत तेहिते अलग नआ
न॥तेहि अधार वे कहत लघु तुलसी परमप्र
मान॥१९॥ससप सकत जासु कहँ नाहि सु
भेक असूक॥कहेउ नसमुकत सो अबुध तु
लसी बिगत बिसूक॥२०॥कहत अवर समुक
त अवर गहत तजत कछु और॥कहेउ सुनै
समुकत नहीं तुलसी अति मति बोर॥२१॥
देखो कौ अदेष इव अनदेखा बिस्वास॥कठिन
प्रबलता मोह की जल कह परम पियास॥
२२॥सोई समर सोइ सुखा सेवत पाइ बसंत॥
तुलसी महिमा मोह की बिदित बखानत संत
॥२३॥सुन्यौ सवन देख्यो नयन संसै समन
समान॥तुलसी समता असमभौ कहत आ

न कहै आन॥२४॥बसहा भव और हित अहि
त सोपिन समुकत हीन॥तुलसी दीन मली
न मति मानत परम प्रवीन॥२५॥भटकत
पद अद्वैतता अटकत ज्ञान गुमान॥सटक
त वितरन ते विहटि फटकत तिषु अभिमा
न॥२६॥जो चाहत तेहि विनु दुखित सुखित
रहित तेहि होइ॥तुलसी सो अतिसै अगम
सुगम रामते सोइ॥२७मात पिता निज बा
लकहि करहिं इष्ट उपदेस॥सुनि माने विधि
आप जेहि निज सिर सहे कलेस॥२८॥म
वसो भलो मनाइबो भलो होनकी आस।
करत गगन के गेडुआ सोसठ तुलसी दास
॥२९॥विलिमि सुदेखत देवता करनी समत
देव॥मुयेमार अविचार रत स्वारथ साधक
एव॥३०॥विनहि बीज तरु एकभव साखा द
ल फल फूल॥कोवरनै अतिसै अमित सब
विधि अकल अतूल॥३१॥सुकपि कमुनि
गन वुध विवुध फल आश्रित अति दीन॥
तुलसी तेसब विरदहित सोतरु तासु अधीन
॥३२॥कोनहिं सेवत आयभव कोनसेय प
छताय॥तुलसी वादहि पचतहैं अपहि आ
पनसाय॥३३॥कहत विविधि फल विम
लतेहि वहत नएक प्रमान॥भरम प्रतिष्ठा
मानि मन तुलसी कथत भुलान॥३४॥म्र
गा जल घट भरि विविधि विधि सींचत न

भ तरु मूल॥ तुलसी मन हरषित रहत बिन हि लहे फल फूल॥ ३५॥ सोपि कहहिं हम कहँ लह्यौं नभ तरु को फल फूल॥ ते तुलसी तिन्ह ते बिमल सुनि मानहिं सुखमूल॥ ३६॥ तेपि तिन्हें जाँचहि बिनै करि करि वार ह जार॥ तुलसी गाडर की दरन जानैं जगत बि चार॥ ३७॥ ससिकर सर्ग रचना किये कत सो भा सरसात॥ स्वर्ग सुमन अवतंस खलु चाह त अचरज बात॥ ३८॥ तुलसी बोल नबूकरे देखत देखनजोय॥ तिन्ह सठके उपदेस का करव सयाने कोय॥ ३९॥ जो न सुनै तेहि काव हिय कहा सुनाइय ताहि॥ तुलसी तेहि उप देसही तासु सरिस मति जाहि॥ ४०॥ कहत सकल घट राममय तौ खोजत केहि काज॥ तुलसी कह इह कुमति सुनि उर आवत अ ति लाज॥ ४१॥ अलख कहहिं देखन चहहिं ऐसे परम प्रबीन॥ तुलसी जग उपदेसही बनि बुध अबुध मलीन॥ ४२॥ हहरत हार न रहित बिद रहत धरे अभिमान॥ ते तुल सी गुरु आव नहिं कहि इतिहास पुरान॥ ४३॥ निज नैनन दीसत नहीं गही आँधरे बाहि॥ कहत मोहबस तेहि अधम परम ह मारे नाह॥ ४४॥ गगन बाटिका सींचही भ रि भरि सिंधु तरंग॥ तुलसी मानहि मोद मन ऐसे अधम अभंग॥ ४५॥ हयद करत रव

ना विहरि रंग रूप सम तूल॥ विहग वदन विष्णु करे ताते भयो नतूल॥ ४६॥ चाह तेहारो आपते मान नआन नज्ञान॥ तुलसी करु पहिचान पति याते अधिक नआन॥ ४७॥ आतम बोध विचार इह तुलसी करु उपकार॥ कोन्ह काउ राम प्रसाद ते पावत परम नपार॥ ४८॥ जहाँ तोष तहँ रामहै राम तोष नहिं भेद॥ तुलसी देखि गहत नहीं सहत विविध विधि-खेद॥ ४९॥ गोधन गजधन वाजिधन और रतन धन खानि॥ जब आवै संतोषधन सब धन धूरि समानि॥ ५०॥ कुथि रति अटत विमूढ लट घट उह घटत नज्ञान॥ तुलसी रटत हटत नहीं आतिसे गति अभिमान॥ ५१॥ भ्रभुवंश गत हास भुव काम नविविधि विधान॥ तो ततवर्त मान जत तत तुलसी परमान॥ ५२॥ भौजर सुक्ति विभव पटिक मन गत प्रगट लषात॥ मन भोजर अपि सुक्ति ते विलग विजात बतात॥ ५३॥ राम चरन पहिचान बिनु मिटी नमनकी दौर॥ जन्मग वाये वादही रटत पराये पौर॥ ५४॥ सुनै वरन मानै वरन वरन विलग नहिं जान॥ तुलसी सुगुरु प्रसाद वल परै वरन पहिचान॥ ५५॥ विटप वेल गन बागके माली कार न जान॥ तुलसी नाविधि विदविना करता राम भुलान॥ ५६॥ करतवही सो कर्म है कह

तुलसी परमान॥करन हार करतार सो भोगौ कर्म निदान॥५७ तुलसी लट पढ़ते मटक अटक आपिन नहिं ज्ञान॥तातें गुरु उपदेस बिनु भर मत फिरत भुलान॥५८ज्यौं बरदा बनि जार के फिरत घनेरे देस॥खांड भरे भुस खात हैं बिन गुरु के उपदेस॥५९॥ बुध्वा बेगन अनय पद म्बपिन पदारथ लीन॥ तुलसी तेहि रासभ सरिस निज मन गनहि प्रवीन॥ ६०॥ कहत विविधि देखे बिना गहन अनेक नएक॥ ते तुलसी सो नहा सरिस बानी बदहिं अनेक॥६१॥ बिनपाये परतीत अति करत जथारथ हेतु॥ तुलसी अबुध अकास इव भरिभरि मूठी लेत॥६२॥ बसन बारि बांधत बिहठि तुलसी कौन बिचार॥ हान लाभ बिधि बाध बिन होत नहीं निरधार॥६३॥ काम क्रोध मद लोभ की जबलगि मनमें खानि॥ कापंडित कामूरख दोनो एकसमान॥६४॥ रत कुलकी करनी तजे ज्ञत नभजे भगवान॥ तुलसी अध वरके भये ज्यौं बधूर को पान॥६५॥ कीर सरिस बानी पढ़त चाखन चाहत खांड॥ मन गरवत बैरागमहं घरमा रावत रांड॥६६॥ राम चरन परचे नहीं बिन साधुन पद नेह॥ मूंड मुडाये बादहीं भांड भये तजि गेह॥६७॥ काह भयो बन बन फिरे जो बनि आयो नाहिं॥ बनते बनते बनि गयो तुलसी घरही माहिं॥६८॥ जोगति जानै बरनकी

तन गनि सो अनुमान॥ वरन विंदु कारन जथा तथा जानु नहिँ आन॥ ६९॥ वरन जोग भव नाम जग जानु भरम को मूल॥ तुलसी करता है तुही जानमानु जनि भूल॥ ७०॥ नाम जगत सम समुरु जग वस्तु नकरि चित चैन॥ विन्दु गए जिमि गैनते रहत सेन को ऐन॥ ७१॥ आपुहि ऐन विचारु विधि सिद्धि विमल गति मान॥ आन वासना विंद सम तुलसी परम प्रमान॥ ७२॥ धन धन कहे नहोत कोउ समुकि देखु धनु मान॥ होत धनिक तुलसी कहत इक्षित नरहत जहान॥ ७३॥ हिमकी मूरति के हिये लगी नीरकी प्यास॥ लगत सब्द गुरु तरनिकर सोमैं रही नआस॥ ७४॥ जाके उर वरवासना भई भास कछु आन॥ तुलसी ताहि विडंवना कहि विधि कथहि प्रमान॥ ७५॥ रुजन नभव परचै विना भेषज करि किमि कोय॥ जान परै भेषज करै सहज नास रुज होय॥ ७६॥ मानस व्याध कुचाह तव सदगुरु वैद समान॥ जासु वचन अल वल अवस होत सकल रुज हान॥ ७७॥ रुचि वाढ़ै सतसंग महँ नीति छुधा अधिकाय॥ होत ज्ञान वलपीन अल वृजिन विपनि मिटि जाय॥ ७८॥ शुक्ल पक्ष सीरा स्वच्छमी कृष्ण पक्ष दुति हीन॥ वढव घटव विधि भांति विचि तुलसी कहहिं प्रवीन॥ ७९॥ सतसंगति सित पक्ष सम असित

असंत प्रसंग॥ जासु आप कहँ चंद्र सम तुल सी बदन अभंग॥८०॥ तीरथ पति सत संग सम भक्ति देव सरि जान॥ विधि उलटी गति रामकी तरनि सुता अनुमान॥८१॥ बर मेधा मानहु गिरा धीर धर्म नग्रोध॥ मिलन त्रिवेनी मन हरनि तुलसी तजहु विरोध॥८२॥ समय सम मज्जन विसद मल अर्नान गइ धोय॥ अवस मिलन संसै नहीं सहज राम पद होय॥८३॥ छेम विमल बारानसी सुर गंगा सम भक्ति॥ ज्ञान विश्वेश्वर अति विसद लसत दया सह सक्ति॥८४॥ बसत छेम ग्रह जासु मन बारानसी लहुरि॥ बिल सति सुर सरि भक्ति जहँ तुलसी नयकृत भौरि॥८५॥ सित कासी मगहर असित लोभ मोह मद काम॥ हान लाभ तुलसी समुझि बास करहु वसु जाम॥८६॥ गये पलटि आवे नहीं है सो करु पहिचान॥ आनु जेहै सो कालहै तुलसी भरम नसान॥८७॥ वर्त्तमान आधीन दोउ भावी भूत विचार॥ तुलसी संसै मन तजहु जोहै सोनिरधार॥८८॥ मानस उर वर सम मधुर राम सुजस सुचि नीर॥ उवेउ रजिन बुधि विमल भट बुधि नहिं अगास अधीर॥८९॥ अलंकार कवि रीति जुत भूषन दूषन रीति॥ वारि जात बरनन विविधि तुलसी विमल विनीति॥९०॥ विनै नि

चार सुहिइता सो परान रस गंध॥ कामादिक नेहि सरल सत तुलसी घाट प्रबंध॥९१॥ प्रेस उसग कविता वलीकलो सरित सुचि धार॥ राम व रा बरि मिलन हित तुलसी हरष अपार॥९२॥ नरल तरंग सुछंद वर हरत हैत तरुमूल॥ वैदिक लौकिक विधि विमल लसत बिसद वरकूल॥९३॥ सत सभा वि मला नगरि सिगारि सुमंगल खानि॥ तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल स नुमान॥९४॥ मुक्त मुमुक्षु वर बिषद श्रोता बि विधि प्रकार॥ ग्राम नगर पुर जुग सुतट तुलसी कहहिं विचार॥९५॥ वारानसी बिराग नहिं मैल मुला मन होय॥ तिमि अवधहि सरजुन नजै कहत सकोवि सवकोय॥९६॥ कहव सुनव समुझब पुनः मुनि मसुकायव ग्रान॥ श्रम हर घाट प्रबंध वर तुलसी परम प्रमान॥९७॥ इति श्री सद्गो साई स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिकायां आत्म बोध निर्देशो नाम चतुर्थः सर्गः॥ ४॥ ॥ जतन अनूपम जानु वर सकल कला गुन धाम॥ अविनासी अव यह अमल मैं यह तनु धरि राम॥१॥ सदा प्रकास सरूप वर अस्तन अपर नत्रान॥ अप्रमेय अद्वैत अज याते दुरत न ज्ञान॥२॥ जानहिं हंस रसम कह तुलसी संत नत्रान॥ जाके कृपा कटाक्षतें पावे पद निर्वान॥३॥ तजत सलिल अप पुनि गहत घटत ब

दत नहि रीति॥ तुलसी यह गति उर निर खि करिय राम पद प्रीति॥ ४॥ चुम्बक दाहन सी तिजिमि संतन हरि सुखधाम॥ जानति रीझ रस म सफरि तुलसी जानत राम॥ ५॥ भरत हरत दरसत सबहिं पुनि अदरस सब काहु॥ तुलसी सगुरु प्रसाद वर होत परम पद लाहु॥ ६॥ ६ जथा प्रत्यक्ष सरूप वस्तु जानत है सब को य॥ तथा हिलै गति को लखब असमं जस अति सोय॥ ७॥ जथा सकल आप जात आ प रवि मंडल के माहिं॥ मिलत तथा जिव राम पद होत तहां लै नाहिं॥ ८॥ कर्म कोस संग लै गयो तुलसी अपनी बानि॥ जहां जाय बिल सै तहां परै कहां पहि चान॥ ९॥ ज्यों धरनी म हं हेतु सब रहत जथा धरि देह॥ ज्यों तलसी लै राम महं मिलत कबहुं नहिं एह॥ १०॥ सोषक पोषक समुक सुचि राम प्रकास सरूप॥ जथा तथा बिनु देखिये जिमि आदरस अनूप॥ ११॥ कर्म मिटाये मिटत नहिं तुलसी किए विचा र॥ करतबही के फेरहे याविधि सार असार॥ १२ ॥ एक किये होय दूसरो बहुरि तीसरो संग। तुलसी कैसहु नानसै अनिसै कर्म तरंग॥ १३ ॥ द्वन्द दोउन्हते रहतभो कोउ नराम तजि आ न॥ तुलसी यह गति जानिहै कोउ कोउ संतसु जान॥ १४॥ संतन कोलै अमि सदन समुकहि सुगति प्रवीन॥ कर्म विपजैं कबहुं न सदा रा

म रसलीन॥२५॥सदा एक रस संत सिय निस वै निसकर जान॥राम दिवाकर दुखहरन तुल सी सील निधान॥२६॥संतनकी गति नृपविजा जानहु ससि परमान॥रमित रहत रसमैं सदा तुलसी रति नहिं आन॥२७॥जात रूप जिमि अनल मिलि ललित होत नननाय॥सन्त सी लकर सीय तिमि लसहि राम पद पाय॥२८॥आपुहि बांधत आपु हठि कौन छुड़ावत ना हि॥सुखदायक देखत सुनत तदपि सोमानत नाहिं॥२९॥जौ न तारते अधम गति उर्ध नौन गति जात॥तुलसी मकरी तंतु ज्व कर्म नकब हू नसात॥२०॥जहां रहत तहं सह सदा तुल सी तेरी वानि॥सुधरै विधि वस होय जब सत संगति पहि चानि॥२१॥रवि रजनी सघरा नय देह अस्थिर अस्थूल॥सूक्षम गुन को जीवक र तुलसी सोतन मूल॥२२॥अवत अपरवि ते जथा जात तथा रवि माहिं॥जहां संघरटत ही दु रत तुलसी जानत नाहि॥२३॥प्रगट भये देखत सकल दुरत लखत कोउ कोय॥तुलसी यह अति से अवास बिन गुरु सुबास नहोय॥२४॥याज ग जे नय हीन नर वर वस दुखमग जाहि॥प्रग टत दुरत महा दुखी कहं लगि कहियत नाहि॥ २५॥सुखदुखमग अपने गहे मग केहु गहत नधाय॥तुलसी राम प्रसाद बिनु सो किमि जानो जाय॥२६॥सहिते रवि रैविते अवनि स

प नेहु दुखकहुं नाहिं॥ तुलसी तब लगि दुरि-
त अति ससि मग्रु लहत ततांहि॥ २७॥ संतन
की गति सीत कर लेस कलेस नहांय॥ सोसि
य पद सुखदा सदा जानु परम पद सोय॥ २८
॥ तजत अमिय ससि जानि जग तुलसी देख
त रूप॥ गहत नहीं सबकहं विदित अति सें
अमल अनूप॥ २९॥ ससि कर सुखद सकल
जगत को तेहि जानत नाहिं॥ कोक कमल
कर दुखद कर जदपि दुखद नहिं ताहि॥ ३०॥ ६
विन देखे समुझे सुने सोउ भौ मिथ्या वाद॥
तुलसी गुरु गम के लखे सहजहि मिटै विषा-
द॥ ३१॥ वरषि विस्व हरषित करत हरत ता
प अघ प्यास॥ तुलसी दोषन जलद कर ज्यों
मड़ जर तज वास॥ ३२॥ चंड देत अमि लेत
विष देखहु मनहिं विचार॥ तुलसी तिमि सि
य संत वर महिमा विसद अपार॥ ३३॥ रसम
विदित रवि रूप लघु सीत सीत कर जान॥ ल
सत जोग जस कार भव तुलसी समरु स
मान॥ ३४॥ लेति अवनि रवि अंस कहं देति
अमिय अपसार॥ तुलसी सूक्ष्म को सदा
रवि रजनीस अधार॥ ३५॥ भूमि भानु अ
स्थूल अप सकल चराचर रूप॥ तुलसी विन
गुरु नालहे यह मत अमल अनूप॥ ३६॥ तु
लसी जे सयलीन नर नैनिसि करत नलीन।
अपर सकल रवि गत भये महा कष्ट अति

दीन॥३७ तुलसी कवनेहु जोगते सत संगत जब होय॥राम मिलन संसै नहीं कहहिं सु मति सब कोय॥३८॥सेवक पद सुखकर सदा दुखद सब्य पद जान॥ जथा विभीषन रावन हि तुलसी समुझ प्रमान॥३९॥सीत उष्ण कर रूप जुग निसि दिन कर करतार॥तुलसीः तिन कहँ एक नहिं निरखहु करि निरधार॥४०॥नहि नैनन काहू लख्यौ धरत नाम सब कोय॥तातें साखीहै समुझ झूठ कबहुं नहिं होय॥४१॥वेद कहत सबकोउ विदित तुलसीः अमिय स्वभाव॥करत पान अपि रुज हरतः अविरल अमल प्रभाव॥४२॥गंध सीत अपि उष्णता सबहि विदित जग जान॥सहि बनस नल सो आनि लगत विन देखे परमान॥४३॥ इन महं चेतन अमल अल विलषत तुलसीदास॥सोपद गुरु उपदेस सुनि सहज होत परकास॥४४॥यहि विधिते वर वोध इहु गुरुप्रसाद कोउ पाव॥हैतै अलतिहु काल महं तुलसी सहज प्रभाव॥४५॥काक सुता सुतवा सुना मिलत जननि पित धाय॥आदि मध्य अवसान गत चेतनसहज सुभाय॥४६॥समता स्वारथ हीनते होत सुविसद विवेक॥तुलसी यह तिन्ह ही फवै जिन्हहि अनेक नएक॥४७॥— सब स्वारथ स्वारथ रटत तुलसी घटत नएक॥ज्ञान रहित अज्ञान रत कठिन कुमन क

र टेक॥४८॥स्वारथ सोजानहु सदा जासो वि
पति नसाय॥ तुलसी गुरु उपदेस विन सो
किमि जानो जाय॥४९॥कारज स्वारथ हित
करै कारन करे नहोय॥मन वाक्रम विसेषते
तुलसी समुकहु सोय॥५०॥कारन कारज जा
नता सव काहु परमान॥तुलसी कारज कार
जो सो तै अपर नआन॥५१॥विन करता का
रज नहीं जानत हैं सव कोय॥गुरु मुख अवन
सुनत नहीं प्राप्ति कवन विधि होय॥५२॥क
रता कारन कारजहु तुलसी गुरु परमान॥लो
पत करता मोह वस ऐसो अवुध मलान॥५३
॥अनिल सलिल विवि जोगते जथा वीचि वहु
होय॥करन करावत नहिं कछुक करता कारन
सोय॥५४॥केस धरन करतार कर तुलसी पति
परधाम॥सोवर करता समन कोउ सव विधि
पुरन काम॥५५॥करता कारन सार यह आदै
अमल अभेद॥कर्म घटत अपि वढ़त हैं तुल॰
सी जानत वेद॥५६॥स्वेदज जवल प्रकारतें
आपु करै कोउ नाहिं॥भये प्रगट तहिके सुनो
को न विलोकत नाहिं॥५७॥भयो विसमता
कर्म महं समता किए नहोय॥तुलसी समता
समुझ कर सकल मान मद धोय॥५८॥सम
हित सहित समस्त जग सुहृद जान सव काहु
॥तुलसी यह मत धारु उर दिन प्रति अति॰
सुख लाहु॥५९॥यह मन महं निश्चै धरहु है

कोउ अपर न आन॥कासन करत विरोध हरि तुलसी समुक प्रमान॥६०॥महि जल अनल अ सो अनिल नभ तहाँ प्रगट तव रूप॥जानि जा य वर बोधतें अति सुभ अमल अनूप॥६१॥जो पै आकस मानतें उपजै बुद्धि विसाल॥तातें अ ति छल हीन ह्वै गुरुसेवन कछुकाल॥६२॥कार न सुख जानहु हिये नित्य अनित्य समान॥गुरुग मतें देखहि सुजन कह तुलसी परमान॥६३॥म हि मयंक अहनाथको आदि ज्ञान भौभेद॥ता विधितें जीवकहँ होत समुक विन खेद॥६४॥ परो फेर निज कर्म महँ भ्रम भवका यह हेत॥ तुलसी कहत सुजन सुनहु चेतन समुक अचे त॥६५॥नामकार दूषन नहीं तुलसी किये वि चार॥कर्मन की घटना समुकि ऐसेवरन उचा र॥६६॥सुजन कुजन महिगत जथा तथा आ न सांस माहिं॥तुलसी जानतहो सुखी होत स समुक विन नाहिं॥६७॥मातु तात भव रीति जिमि तिमि तुलसी गति सोरि॥मातन तात नजातु तब हैतेहि समुक बहोरि॥६८सर्व सक लतें है सदा विक्षेपित सवठौर॥तुलसी जानहि सुहृदजे तेअति मति सिर मौर॥६९॥अलंकार घटना कनक रूप नाम गुन तीन॥तुलसी राम प्रसादतें परि खहि परम प्रवीन॥७०॥एक पदा रथ विविधि गुन संज्ञा अगम अपार॥तुलसी सुगुरु प्रसादतें पायेपद निरधार॥७१॥गंध न

मूल उपाधि बहु भूषन तन गन जान॥सोभा गुन तुलसी कहहिं समुझहिं सुमति निधान॥७२॥ जैसो जहां उपाधि तहं घटित पदारथ रूप॥ तैसो तहां प्रभास मन गुन गन सुमति अनूप॥७३॥ जासु वस्तु अस्थिर सदा मिटत मिटाये नाहिं॥ रूप नाम प्रगटत दुरत समुझि बिलोकहु ताहि॥७४॥ पिय रूप संज्ञा कहब गुन सुविवेक बिचार॥ इतनोई उपदेसवर तुलसी कियेविचार॥७५॥ सदा सगुन सीता रमन सुखसागर बल धाम॥ जन तुलसी परखे परम पाये पद विश्राम॥७६॥ सगुन पदारथ एक नित निर्गुन अमित उपाधि॥ तुलसी कहहिं बिसेषतें समुझ सुगति सुहि साधि॥७७॥ जथा एक महं बेद गुन नामहं को कहु नाहि॥ तुलसी बरतत सकल हैं समुझत कोउ कोउ नाहि॥७८॥ तुलसी जानत साधु जन उदै अस्त गत भेद॥ बिन जाने कैसे मिटै बिविधि जनन जनखेद॥७९॥ संसै सो कस मूल रुज देत अमित दुख ताहि॥ अहि अनुगत सपने बिबिधि चाहि परायन जाहि॥८० तुलसी साचो सापहै जबलगि खुलैंन नैन॥ सो तबलगि जबलगि नहीं सुने सुगुरु बरबैन॥८१॥ पूरन परमारथ दरस परसत जौलगि आस॥ तौलगि घन उत्थान नद जबलगि जलन प्रगास॥८२॥ तबलगि हमते सब बड़ो जबलगि हैकछु चाह॥ चाह रहित कहु को अधिक पाय परम पद थाह॥८३

कारन करता है अचल आप अनाद अजरूप॥ताते कारज विपुलतर तुलसी अनल अनूप॥८४॥करता जानि नपरतहै बिन गुरु कर परसाद॥तुलसी निज सुख विधि रहित केहि विधि मिटै विषाद॥८५॥भिन भय घट जा न न जगत बिन कुलाल नहिं होय॥तिमि तुलसी करतार हित कर्म करै कहु कोय॥८६॥ताते करता ज्ञान कर जाते कर्म प्रधान॥तुलसी नालषि पाइहो किए अमित अनुमान॥८७॥अनूमान साखी रहित होत नहीं परमान॥कह तुलसी परतक्ष जो सो कहु अपर कोआन॥८८॥मिलि कारन करता सहित कारज किए अनेक॥जौं करता जाने नहीं तौ कहु कवन विवेक॥८९॥स्वर्न कार करता कनक कारन प्रगट लषाय॥अलंकार कारज सुखद गुन सोभा सरसाय॥९०॥चामी कर भूषन अमित करता कह तव भेद॥तुलसी जे गुर गम रहित ताहि रमित अति खेद॥९१॥तननि मित्त जहँ जो भयो तहाँ सोई परमान॥जिन जाने माने तहाँ तुलसी कहहिं सुजान॥९२॥म्रन मय भाजन विविधि विधि करता मन भव रूप॥तुलसी जानैते सुखद गुरु गम ज्ञान अनूप॥९३॥सब देखत म्रन भाजन हिं कोइ कोइ लखत कुलाल॥जाके मनके रूप वह भाजन विलखु विसाल॥९४॥एकै रूप कुलालको माटी एक अनूप॥भाजन अमित विसाल लघु सो करता मन रूप॥९५॥जहाँ रहत बरत

त तहां तुलसी नित्य स्वरूप॥भूतन भावी नाहि
कहं अतिसै अमल अनूप॥९६॥स्वास समीर प्र
त्यक्ष अप स्वच्छ दरस लषात॥तुलसी राम प्रसाद
बिन अवि गति जानि नजात॥९७॥तुलसी तुल
रहिजातहै जुग तन अचल उपाधि॥यह गति ते
हि लखि परत जेहि भई सुमति सुठि साधि॥९८
॥करता कारन कालके जोग करम मत जान॥
पुनः काल करता हुरत कारन रहत प्रमान॥९९॥
इति श्री महेश साई स्वामी तुलसी दास बिरचि
तायां सप्त शति कायां कर्मसिद्धांतयो गोनाम पंच
मः सर्गः॥५॥ ॥ ७ ॥ जल थल तन गतहै सदा ते
तुलसी तिहु काल॥जन्म मरन समुझे बिना भा
सत समन बिसाल॥१॥तैं तुलसी करता सदा का-
रन शब्द नशान॥कारन संज्ञा सुख दुखद बिन गुरु
नहि किमि जान॥२॥कारज रतकरता समुझ दुख
सुख भोगत सोय॥तुलसी श्री गुरु देव बिन दुख
भइ दूर नहोय॥३॥कारन सब्द सरूपमैं संज्ञा गुन
भव जान॥करता सुर गुरतैं सुखद तुलसी अपर
नशान॥४॥गंध बिभावरि नीर रस सलिल अन-
ल गत ज्ञान॥वायु वेग कहं बिन लखे बुध जन
कहहिं प्रमान॥५॥अनुस्वार अक्षर रहित जानत
हैं सब कोय॥कहं तुलसी जहं लगि बरन तासु
रहित नहिं होय॥६॥आदिहु अंतहु हैसोई तुल
सी और नशान॥बिनदेखे समुझे बिना किमि को
ह करै प्रमान॥७॥रहित बिंदु सब बरनतैं रेफ स

हित सब जान॥ तुलसी स्वर संजोगते होत बरन पद मान॥ ८॥ अनुस्वार सूक्षम जथा तथा बरन अस्थूल॥ जो सूक्षम अस्थूल सो तुलसी कबहुं नभूल॥ ९॥ अनिल अनल पुनि सलिल रज तन गत तनवत होय॥ बहुरि सोरज गतजल अनल मरुत सहित रवि सोय॥ १०॥ और भेद सिद्धांत॰ यह निरखु सुमति कर सोय॥ तुलसी सुत भव जोग बिन पितु संज्ञा नहिं होय॥ ११॥ संज्ञा कह तव गुन समरु सुनब अह परमान॥ देखब रूप बिसेखहै तुलसी वेद बखान॥ १२॥ होत पितातें पुत्र जिमि जानत कोकछु नाहिं॥ जब लगि सुत परसो नहीं पितु पद लहै नताहि॥ १३॥ तिमि बरनन कर संज्ञा बरन बरन संजोग॥ तुलसी होय नबरन कर जब लगि बरन बियोग॥ १४॥ तुलसी देखहु सफल कहै यहि बिधि सुत॰ आधीन॥ पितु पद परखि सो हद भयो कोउ कोउ परम प्रवीन॥ १५॥ जहं देखो सुत पद सकल भयो पिता पद लोप॥ तुलसी सोजाने सोई जासु अमोलिक चोप॥ १६॥ ख्यात सुवन तिहु॰ लोक महं महा प्रबल अति सोइ॥ जो कोइ तेहि पाछे करै सोपर आगे होइ॥ १७॥ तुलसी॰ होत नहीं कछु कर हित सुवन वेवहार॥ ताही ते अगनज भयो सब बिधि तेहि पर चार॥ १८॥ सुवन देखि भूल सकल भय अति परम अधीन॥ तुलसी जेहि समुझाइये सोमन करत मलीन

न॥१९॥ मानत सोसाचो हिये सुनत सुनावत ॥ वादि॥ तुलसीतें समुझन नहीं जोपद अमल अ नादि॥२०॥ जाहि कहतहैं सकल सो जेहि कह त व सो पेन॥ तुलसी ताहि समुझि हिये अजहु क रहु चित चैन॥२१॥ तुलसी जोहै सो नहीं कहत आन सब कोय॥ यहि विधि परम विडम्बना॥ कहहु नका कह होय॥२२॥ गुरु कहिवो सिद्धान्त यह होय जथारथ बोध॥ अनुचित उचित लपा- य वर तुलसी मिटै विरोध॥२३॥ सत संगत को फल यही संसै लहै नलेस॥ है अस्थिर सुचि॥ सरल चित पावै पुनि नकलेस॥२४॥ जो मर वो पद सबनको यह लखि साध असाध॥ कव न हेतु उपदेस गुरु सत संगत भव बाध॥२५॥ जो भावी कछु हैनहीं कहो गुरु सत संग॥ येमि कुमतितें कठ गुरु संतनको परसंग॥२६॥ जो से लखि नाहीं परन तुलसी पर पद आप॥ तो लखि सोहि विवस सकल कहन पुत्रको बाप ॥२७॥ जहं लगि संज्ञा वरन औ जासु कहेते हो य॥ तो तुलसी सेहैं सवल आन कहा कछु होय ॥२८॥ अपने नैनन देखिजे चलहिं सुमति वर लोग॥ तिनहिं नविपति विषाद रुज तुलसी सुमति सुजोग॥२९॥ स्वगा गगान वर ज्ञान वि न करत नहीं पहिचान॥ परवस सठ हठ नमन सुख तुलसी फिरत भुलान॥३०॥ काहु कहो न हि लोहिक जेहि उपदेसन ताल॥ तुलसी कह

त सो दुख सहत समुझ रहित हित बात॥३१॥
बिन काटे तरुवर जथा मिटै कवन बिधि छा
हँ॥ त्यौं तुलसी उपदेस बिन मिट संसै कोउ ना
हें॥३२॥ अपनो करतब आप लखि सुनि गुनि
आप बिचार। तौ तोहि कह दुखदा कहा सुखदा
सुमति अधार॥३३॥ ब्राह्मन बर बिद्या बिनै सु
ति बिबेक निधान॥ पयरति अनघ अतीत मति
साहित दया श्रुतिमान॥३४॥ बिनै छत्र सिर जा
सुके प्रति पद परउपकार॥ तुलसी सो छत्री स
ही रहित सकल बिभिचार॥३५॥ बैस बिनै म
ग पग धरै हरै कटुक बर बैन॥ सदय सदा सुचि
सरलता हीय अचल सुख ऐन॥३६॥ सूद्र दुः
पथ परि हरै हृदय बिप्र पद मान॥ तुलसी मन
समता सुमति सकल जीव सम जान॥३७॥ हे
तु बरन बर सुचि रहनि रसनि रास सुख सार
*बाहन काम सुधासरस तुलसी सु दृढ बिचार
॥३८॥ जथा लाभ संतोष रत अरहमगवन सग
रीत॥ सेतुलसी सुखमै सदा जिन्ह लनु त्रिभव
बिनीत॥३९॥ रहै जहाँ बिचरै तहाँ कमी कहूँ क
छु नाहिं॥ तुलसी तहँ आनंद संग जात जथा
संग छाहिं॥४०॥ करत कर्म जहिकां सदा सो
मन दुख दातार॥ तुलसी जौं समुझै मनहिं*
तौ तोहि तजै बिचार॥४१॥ कहत सुनत सम
कत लखत तेहि तैं बिपति नजाय॥ तुलसी स
बते बिलग हैं जबते नाहिं लहराय॥४२॥ सुनत

कोटि कोटिन कहत कौड़ी हाथ नएक॥ देख
त सकल पुरान श्रुति तापर रहित विवेक॥४३
समुझत है संतोष धन यातें अधिक नआन॥
गहत नहीं तुलसी कहत तातें अबुध मलान॥
४४॥कहा होत देखे कहे सुनि समुझे सब री
ति॥तुलसी जब लगि होत नहिं सुखद राम
पद प्रीति॥४५॥कोटिन साधन के किये अंतर
मल नहिं जाय॥तुलसी जौलगि सकल गुन स
हित नकर्म नसाय॥४६॥चाहबनी जबलगि स
कल तब लगि साधन सार॥तामहं अमित कले
स कर तुलसी देख विचार॥४७॥चाह किये दुखि
या सकल ब्रह्मादिक सब कोय॥निश्चलता तुल
सी कठिन राम कृपा बस होय॥४८॥अपनो क
र्म नआप कहं भलो मंद जेहि काल॥तब जान
व तुलसी भई अति सैं बुद्धि विसाल॥४९॥तुल
सी जबलगि लखि परत देह प्रान को भेद॥तबलगि
कैसे कै मिटै करम जनित बहु खेद॥५०॥जोइ दे
ह सोइ प्रानहै प्रान देह नहिं होय॥तुलसी जो ल
खि पायहै सोनिश्चय नहिं होय॥५१॥तुलसीतें झू
ठो भयो करि झूठे संग प्रीति॥है सांचो होय सांच
जब गहै रामकी रीति॥५२॥कूड़ी रचना सांचहै र
चत नहीं अलसात॥वरनत हु कवान विहरि नेक
न बूझत बात॥५३॥कर मरवरी कर मोह थल अं
क चराचर जाल॥हरन भरत भर हर गनत जग
त जोतखी काल॥५४॥कहत काल किल सकल

वुधताकर यह बेवहार॥उतपति थितिलै होतहै
सकल तासु अनुहार॥५५॥अंकुर किसलै दल=
विपुल सारवा जुत वर मूल॥फूलि फरत रितु अ
नुहरत तुलसी सकल सतूल॥५६॥कह तव क
रतव सकल तेहि ताहि रहत नहिं आन॥जान
नमानन आन विधि अनूमान अभिमान॥५७
हान लाभ जय विधि विजय ज्ञान दान सनमान
खान पान सुचि रुचि असुचि तुलसी विदित वि
धान॥५८॥सालक पालक सम विसम रस भम
गम गति ज्ञान॥अट घट लट नट नादि जट तुल
सी रहित नजान॥५९॥कठिन करम करनी क
थन करता कारक काम॥काय कष्ट कारन कर
म होत काल समसाम॥६०॥स्ववर आतमा बो
ध वर स्वर विन कवहू नहोय॥तुलसी स्वसम
विहीनजे तरवर तर नहिं सोय॥६१॥चितरति वि
त वेवहरित विधि अगाम सुगाम जय मीच॥धी
र धरम धारन हरन तुलसी परत नवीच॥६२॥
शब्द रूप विवरन विसद तासु जोग भव नाम॥
करता रूप वहु जाति तेहि संज्ञा सव गुन धाम॥
६३॥नाम जाति गुन देखि कै भयो प्रवल उर भ
र्म॥तुलसी गुरु उपदेस विन जानि सकै को म
र्म॥६४॥अपनो कर्म वर मानि कै आप वंधो सव
कोय॥कारज रत करता भयो आपन समुझत ३
सोय॥६५॥को करता कारन लखै कारज अगम
प्रभाव॥जो जहं सो तहं तर हरष तुलसी सहज

सुभाव ॥ ६६ ॥ तुलसी दिन गुरु को लखै वर्त्तमान विधि रीति ॥ कहुँ कोहु कालते भयो सूर उषा ससि सीत ॥ ६७ करता कारन कर्मते पर पर आतम ज्ञान ॥ होत नवि न उपदेस गुरु जो पढ़ै वेद पुरान ॥ ६८ ॥ प्रथम ज्ञान स मुझै नहीं विधि निषेध बेवहार ॥ उचितानुचित हिंहारि धरि करनव करय संभार ॥ ६९ ॥ जब मन महं उहराय विधि श्रीगुरु वर परसाद ॥ इहि विधि परमातम लखै तुलसी मिटै विषाद ॥ ७० ॥ बरबस कारन विरोध हठि होन चहत अक होन ॥ ताहि गति बक दुर्क ध्यान इव तुलसी परम प्रवीन ॥ ७१ ॥ आक कर्म भेषज वि हित लखत नहीं मति हीन ॥ तुलसी सठ अकबस + बिहठि दिन दिन होत मलीन ॥ ७२ ॥ करता होते कर्म बुग भोगुन होय सरूप ॥ करत भोग करनव जथा हो य रंक किन भूप ॥ ७३ ॥ वेद पुरान शास्त्र गुन निज बु धि बल अनुमान ॥ निज निज करि कारिहै बहुरि क हु तुलसी परमान ॥ ७४ ॥ विविधि प्रकार कथन करै ताहि जथा भव मान ॥ तुलसी सुगुरु प्रसाद बल को न कोउ कहत प्रमान ॥ ७५ ॥ उर डर अति लघु होन को भव लघु सुमति भुलान ॥ स्वर्न लाह लखि परत नहि लखत लोह की हानि ॥ ७६ ॥ नैन दोष निज क हत नाहिं विविधि बनावत बान ॥ सहत जानि तुल + सी विपति तदपि ननेक लजान ॥ ७७ ॥ करत चातुरी मोह बस लखत न निज हित हान ॥ सुक मरकट + इव गहत हठ तुलसी परम सुजान ॥ ७८ ॥ द्वविधा सकल प्रकार सब समुझि परत है नाहिं ॥ लखत

नकंटक मीन जिमि असनभपत भ्रम नाहिं॥७९॥
तुलसी निज मन कामना चहत सुन्य कहँ सेयान
मन गाय मबंक बिबोधि कहहु पयस कहि देय॥८०
बातहि बातहि बनि परै बातहि नाल नसाय॥बातहि
आदिहि दीप भव तातहि अंत बताय॥८१॥बातहिते
बनि आवई बातहिते बनिजात॥बातहिते बर बर मिल
त बातहितैं बौरात॥८२॥बात बिना आतसे बिकल बा
तहितें हरषात॥बनत बात बरबातते करत बात बर घ
त॥८३॥तुलसी जाने बात बिन बिगरल हर इक बात
॥अनजाने इरब बातके जानिपरल कुसलात॥८४॥प्रे
म बयर औ पुन्य अघ जस अपजस जै हान॥बात बी
ज इन सबनको तुलसी कहहिं सुजान॥८५॥सदा
भजन गुरु साधु द्विज जीव दया सम जान॥सुरबद
सुनै रत सत्य ब्रत स्वर्ग सप्त सोपान॥८६॥बंचक बिधि
रतनर तनै बिधि हिंसा अति लीन॥तुलसी जग महँ
बिदित बर नरक निसैनी तीन॥८७॥जे नर जग गु
न होय जुत तुलसी बदत बिचार॥कबहु सुखी कब
हूं दुखित उदै अस्त बेवहार॥८८॥कारज जगके जु
गल तम काल अचल बलवान॥त्रिबिधि बिफलते
तहटहिं तुलसी कहहिं प्रमान॥८९॥अनुभव अम
ल अनूप गुरु कछुक अमल गति होय॥चवै कालः
कर्म दोषंत कहहिं सुबुध सबकोय॥९०॥मव बिधि
पूरन धाम बर राम अपर नहिं आन॥ताकी कृपाः
कटाक्षते होत हिये दृढ ज्ञान॥९१॥सो स्वामी सो
तर सखा सोवर सुखदातार॥तात मात आवद हर

न सो श्वास मैं अधार॥९१॥सुखद दुखद कारज क ठिन जानत को तेहि नाहिं॥जानेऊ पर बिन गुरु कृपा करतब बनत नकाहि॥९३॥तुलसी सकल प्रधान है वेद विदित सुख धाम॥तामहं समुझब कठिन अति जुगल भेद गुन नाम॥९४॥नाम कहत सुख होत है नाम कहत दुख जात॥नाम कहत सुख जात दुरि नाम कहत दुख खात॥९५॥नाम कहत वैकुंठ सुख नाम कहत अघ खान॥तुलसी तो ते उर समुझि करहु नाम पहिचान॥९६॥चारो चौदह अष्ट दस रस समुझब भरिपूर॥नाम भेद समुझे विना सकल समुझ महं धूर॥९७॥वार दिवस निसि मास सित असित बरष परमान॥उत्तर दखिन श्वास रवि भेद सकल महं जान॥९८॥कर्म सुभा सुभ मित्र और रोदन हसन बखान॥और भेद अति अमित है कहं लगि कहिय प्रमान॥९९॥जहं लगि जन देखब सुनब समुझब कहब सुनीत॥भेद रहित कछुहे नहीं तुलसी कहहिं विनीत॥१००॥भेद याहि विधि नाम महं बिन गुरु जान नकोय॥तुलसी कहहिं विनीत वर जौं विरंचि शिव होय॥१०१॥इति श्री महाराज स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्तसतिकायां ज्ञान सिद्धांतयो गोनाम षष्टमः सर्गः ॥६॥ । ॥ ॥ ॥ ॥तिनहि पढे तिन्हही सुने तिनहि सुमति परगास॥जिन आसा पाछे करे गहे अभ्व निसास॥१॥तबलगि जोगी जगत गुरु जब लगि रहै निरास॥जब आसा मनमें जगी जग गु

रु जोगी दास ॥२॥ हित पुनीत स्वारथ सबहि अहि त असुचि बिन चाउ ॥ निज मुख मानिक सम्मद मन भूमि परत भौ हाउ ॥३॥ निज गुन घट तन नाग नग हर्षि नपहिरत कोल ॥ गुंजा प्रभु भूषन करे तातें बढे नभोल ॥४॥ इद सुमन करि वास तिल परिहरि खरि रस लेन ॥ स्वारथ हित भूतल भरे मनमें चकल नसेत ॥५॥ अंसुवन पथिक निरासतें तटभुद सजल सरूप ॥ तुलसी किन बंचे नहीं इन मब थलके कूप ॥६॥ तुलसी मित्र महा सुखद सबहि मित्रकी चाव ॥ निकट भये बिलसत सुरूप एक कृपाकर छाव ॥७॥ मित्र कोप बरतर सुखद अनहित म्दुल कराल ॥ दुमदल सिसि रस खात सब सहनि दाघ अति लाल ॥८॥ खल नेर गुन मानें नहीं मेटहि दाता चोप ॥ जिसि जल तुलसी देत रवि जलद करत तेहि लोप ॥९॥ बरषत हरषत लोग सब करषत लखत नकोय ॥ तुलसी भूपति भानु सम प्रजा भाग वस होय ॥१०॥ भोली भानु कृसानु सम नीत निपुन महिपाल ॥ प्रजा भाग वस होहिंगे कबहिं कबहि कलिकाल ॥११॥ समै परे सुपुरुष नरन लघुकरि गनिय नकोय ॥ नायक पीपर बीज सम बचे तो तरु वर होय ॥१२॥ बंदूं रास रत जगत मैं के परहित चित जाहि ॥ प्रेम पैज निबही जिन्हे बडो सो सबही चाहि ॥१३॥ तुलसी संतन से सुने संनत इहै बिचार ॥ तन धन चंचल अचल जस जुग जुग पर उपकार ॥१४॥ ऊँचहि आपब विभव बर नीचहि दन्त नहोय ॥ हान वद द्विज राज क

हैं नहिं तारा गन कोय॥२५॥ बड़े रलहिं लघुके गुन हिं तुलसी लघुहि नहेत॥ गुंजाते मुक्ता अरुन गुंजा हीन नस्वेत॥२६॥ होहिं वड़े लघु ससे सह तौ लघु सकहिं नकाढ़ि॥ चन्द्र दूबरो कूबरो तऊ नषततेवा ढ़ि॥२७॥ भरा तुरग नारी नृपति नर नीचो हथिया र॥ तुलसी परख्त रहब निन दलहीं पलटत बार॥ २८॥ दुरजन आप समान करि को गदेहित लागि॥ तपत लोय सहजाहि पुनि पलटि बनावत आगि २९॥ मंत्र तंत्र तंत्री त्रिया पुरुष अश्व धनपाठ॥ प्रीति गुन जोग वियोगते तुरित जाहिं सश्राठ॥३०॥ नीचः निचाई नहिं तजे जौं पावहि सत संग तुलसी चंदन विटप वसि विन विष भयेन भुवंग॥३१॥ कुस जन दरपन सम सदा करि देखो हिय सेरासनमुख को गति औरहे विमुख भये कछु और॥३२॥ मित्रक औगुन मित्रको परपह भाषत नांहि॥ कूप छांह जिमि आपनी राखत आपहि मांहि॥३३॥ तुलसी सो समर्थ सुमति सुकृती साधु सुजान॥ जो विचारि ववहरत जग खरच लाभ अनुमान॥३४॥ सीख सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन सांच॥ सुनि करिये पुनि परिहरिये परम नरंजन पांच॥३५॥ पुषिहि निज रुचि काज करि रुषहिं काज विगारि॥ तिया तनैः सेवक सखामनके कंटक चारि॥३६॥ नारि नगर भोजन सचिव सेवक सखा अगार॥ सरस परिहरे रंग रस निरस विखाद विकार॥३७॥ दीरघ रोगी दारदी कटुवच लोलुप लोग॥ तुलसी प्रान समान जौं तुरित

स्यागिवे जोग॥२८॥धाय लगे लोहा ललकि खैंचिलेइ थ नीच॥समरथ पापी सोवयर तीन वेसाही मीच२९॥तुलसी स्वारथ सामुहे परमारथ तन पीठि॥अंधक हे दुख पावकहि डिठियारे हिय डीठि॥३०॥अन समर्थे नै सोचवर अवसि समुझिये आप॥तुलसी आपनः समुझि विन पल पल पर परिताप॥३१॥कूप खनहिं मंदिर जरत लावहिं धारि बबूर॥वोये लुन चह समय विन कुमति सिरोमनि कूर॥३२॥निडर अनेकरि अन कुसल वीस वाह सम होय॥गयो गयो कह सुमति ः जन भयो कुमति कह कोय॥३३॥वहु सुत वहु रुचि वहु वचन वहु अचार वेवहार॥इनको भलो मनाइवो इह अज्ञान अपार॥३४॥अपजस जोगकी जानकी मनि चोरीकी कान्ह॥तुलसी लोग रिकाइवो करसि कातिवो नान्ह॥३५॥मॉगि मधुकरी खात जे सोवत पांव पसार॥पाप प्रतिष्ठा वढि परी तुलसी वाढ़ी रारि॥३६॥लही आँखि कव आंधरहिं वॉरू पूत कव जाय॥कव कोढ़ी काया लही जग वहराइच जाय॥३७॥या जगकी विपरीत गति काहि कहो समुझाइ॥जल जलि गौकरव वाधि गौ जनुः तुलसी मुसुकाइ॥३८॥के जूकिवो कि वूकिवो दानकि काय कलेस॥चारि चारु परलोक पथ जथा जोग उपदेस॥३९॥वुध कि सानसर वेद वत मत्त खेन सव सोच॥तुलसी कृषि गति जानिवो उत्तम मध्यम नीच॥४०॥सहि कुवोल सासति असम पाय अनट अपमान॥तुलसी धर्म नपरि हरहिं ते

वर संत सुजान॥४१॥ अनहित ज्यों परहित किये आ
पन हित तम जान॥ तुलसी चारु विचार मति करिय
काज सम मान॥४२॥ मिथ्या माहुर सजन कहँ खल
हिं गरल सम साँच॥ तुलसी परसि परात जिमि पारद
पावक आँच॥४३॥ तुलसी खल वानी विमल सुनि॥
ससुरुख हिय हेरि॥ राम राज बाधक भई मंद मंथ
रा चेरि॥४४॥ दान दयादिक जुइके वीर धीर नहिं॥
आन॥ तुलसी कहहिं विनीत इति तेनर वर परि मान
४५॥ तुलसी साथी विपतिके विद्या विनय विवेक॥ सा
हस सुकृत सत्य व्रत राम भरोसो एक॥ तुलसी अस
मैंके सखा साहस धर्म विचार॥ सुकृत सील स्वभाव
रिज राम सरन आधार॥४७॥ विद्या विनै विवेक रति
रीत जासु उर होय॥ राम परायन सोसदा आपद ता
हि नकोय॥४८॥ विन प्रपंच खलु भीख भलि नहिं॥
फल किये कलेस॥ वावन वलि सोलीन्हि छलि दीन्ह
सबहि उपदेस॥४९॥ विबुध काज वावन वलिहि छलो
भलो जिय जानि॥ प्रभुता तजि वसभे तदपि मनते॥
गए नगलानि॥५०॥ वडे वडेते छल करें जनम कनौ
ड होहिं॥ तुलसी श्रीपति सिर लसैं वलि वावन गति
सोहि॥५१॥ खल उपकार विकारफल तुलसी जान ज
हान॥ सेरवट मरकट वनिक वक कथा सत्य उपखान
५२॥ जौं मूरख उपदेसके होते जोग जहान॥ दुरजो-
धन कह वोध किन आये स्याम सुजान॥५३॥ हित
पर वढत विरोध जव अनहित पर अपमान॥ राम वि
मुख विधि वाम गति सगुन अघाय अमान॥५४

साह सही सिखकोप वस किये कठिन परिपाक॥ सठ
संकट भाजन भये हठि कुजती कपि काक॥५५॥ मारि
सौंह करि खोजलैं करि मत सब विन त्रास॥ मुये +
+ नीच विन मीचते जदनके विस्वास॥५६॥ लोक आ
पनी नृकपर खोक विचार विहीन॥ ते उपदेस न मानहीं
मोह महो दधि मीन॥५७॥ समुझि सुनीत कुनीत +
रत जागतही रहसोय॥ उपदेसिवो जगाइवो तुलसी
उचित नहोय॥५८॥ परमारथ पथ मत असुझि लसत
विषै लपटाल॥ उतरि चितातें अध जरी मानहु सती
परान॥५९॥ नजत अमिय उपदेस गुरु भजत विषै
विष खान॥ चंदु किरिन धोखे पयस चाटत जिमि
सठ स्वान॥६०॥ सुर सदलन तीरथ पुरिन निपट कु
चालि कुसाज॥ मनहु मवासे मारि कलि राजत स
हित समाज॥६१॥ चोर चतुर बटमार भट प्रभुप्रिय भड़
आभंड॥ सब भक्षी परमारथी कलि सुपथ पाखंड॥६२
गोल गँवार नृपाल कलि जमन महा महिपाल॥ सा
मन दामन भेद कलि केवल दंड कराल॥६३॥ काल
तोपची तुपक महि दारू अनै कराल॥ पाप पलीता
कठिन गुरु गोला पुहुमी पाल॥६४॥ राग रोष गुन
दोष को साखी हृदय सरोज॥ तुलसी विकसत मित्र
लखि सकुचत देखि मनोज॥६५॥ वयर सनेह सया
न पहि तुलसी जोनहि जान॥ तेकि प्रेम पग मग॰
धरत पसु विन पूछ वखान॥६६॥ राम दास यह ॰
जायके जोनर कथहि सयान॥ तुलसी अपने खांड
महं खाक मिलावत स्वान॥६७॥ त्रिविधि एक विधि

प्रभु अगुन प्रजहिं सँवारहिं राउ॥करते होत कृपानको कठिन घोर घन घाउ॥६८॥काल विलोकत ईस रुष भानु काल अनुहार॥रविहि राहु राजहिं प्रजा बुध बेवहरहि विचार॥६९॥जथा अमल पावन पवन पाप सुसंग कुसंग॥कहिय सुवास कुवास तिमि काल महीस प्रसंग॥७०॥भलउ चलत पथ सोच भय न्टप नियोग नय नेम॥कुतिय सुभूखन भूखियत लोह ने वारित हेम॥७१॥सुधा कुनाज सुनाज पल आम असन सम जान॥सुप्रभु प्रजा हित लेहि कर सामादिक अनुमान॥७२॥पाके पकए विटप दल उत्तम मध्यम नीच॥फल नर लहहि नरेस तिमि करि विचार मन बीच॥७३॥धरनि धेनु चरि धरम तन प्रजा सुवत्स पन्हाय॥हाथ कछू नहिं लागिहै किये गोष्टकी गाय ७४॥टंक टंक है परत गिरि सारवा सहस खजूर॥गरहि कुन्टप करि करि कुनै सोकुचाल भुवि भूरि॥७५ भूमि रुचिर रावन सभा अंगद पदमहिपाल॥धर्म राम नैसीम वल अचल होत तिहुं काल॥७६॥प्रीन राम पद नीत रत धर्म प्रतीत स्वभाव॥प्रभुहि नप्रभुता परिहरे कवहूं वचन मनकाय॥७७॥करके करम नके मनहिं बचन वचन जिय जानि॥ भूपति भलहि नपरि हरहिं विजै विभूति सयान॥७८॥गोली वान सुमत्त सुर समुझि उलटि गति देखु।उत्तम मध्यम नीच प्रभु वचन विचारु विसेष॥७९॥सत्रु सयाने सलिल दव राख सीस अपुनाव॥बूड़त लखि इसमगत सति चपरि चहूं दिस धाव॥८०॥रैयत राज समाज

घर तन धन धर्म सुबाहु॥ सत्य सुसचिवहि सौंपि सु
ख विलसहिं निज नर नाहु॥८१॥ रसना मंत्री दसन ः
जन तोष पोष सब काज॥ प्रभु कैसे त्नप दान वृकः
बालक राज समाज॥८२॥ लकरी डौवा करछुली सरस
काज अनुहारि॥ सुप्रभु जो गहहिं नपरि हरहिं सेवक
सखा विचारि॥८३॥ प्रभु समीप छोटे बड़े अचल हो
हिं बलवान॥ तुलसी विदित विलोकहीं कर अंगुली ः
अनुमान॥८४॥ तुलसी भल बरतत बढ़त निज मूल
हि अनुकूल॥ सकल भांति सब कहं सुखद दलन स
हित बिन फूल॥८५॥ सधन सगुन सध रमस्त गन
सज्जन सुखद लमहीप॥ तुलसी जेअभिमान बिनः
तत्रिभुवनके दीप॥८६॥ साधन समय सुसिद्ध लहि उ
भय मूल अनुकूल॥ तुलसी तीनों समय सम तेमहि
मंगल मूल॥८७॥ रामायन अनुहरत सिष जग भौ
भारत रीत॥ तुलसी सठकी कोसुनै कलि कुचालि ः
पर प्रीत॥८८॥ सुहित सुखद गुन जुत सदा काल जो
ग दुख होय॥ घर धन जारत अनल जिमि त्यागो सु
ख नहिं कोय॥८९॥ तुलसी सरवर खंभ जिमि तिमि
चेतन पट माहि॥ नहि सूखत पन कृतनसो ससुरुः
सुबुध जन नाहि॥९०॥ तुलसी कगरा बढनके बीचः
परहु जनि धाय॥ लहैं लोह पाहन दोऊ बीच रुई ः
जरि जाय॥९१॥ अर्थ आदि हन परिहरहु तुलसी सः
हित बिचार॥ अंत गहहु सब कहं सुने संतन मत सु
ख सार॥९२॥ गहु उपकार विविचार पर माफल हानि
विमूल॥ अहो जानु तुलसी यतन बिन जाने दुखमूल

९३॥नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सींचहि ऊख पोषत पयद समान जल विषय ऊखके रूख॥९४॥ लोक वेदहू लौंदगौ नाम भूलको पोच॥धरम राज जम राज जस कहत सकोच नसोच॥९५॥तुलसी देवल रामके लागी लाख करोर॥काक अभागे हगि भरे महिमा भयेउ नथोर॥९६॥भलो कहहिं जाने बिना कीअथवा अपवाद॥तुलसी गांडुर जानि जिय करहुन्हरख विषाद॥९७॥तन धन महिमा धर्म जेहि जाकहँ सह अभिमान॥तुलसी जियत विडंबना परिनामहु गति जान॥९८॥बड़ो विबुध दरबारतें भूमि भूप दरबार॥जापक पूजक देखियत सहत निरादर भार॥९९॥खग म्रग मीत पुनीत किय = बनहु राम नेपाल॥कुल द्वाल रावन घरहि सुखद बंधु किय काल॥१००राम लषण विजई भये सुनहु गरीब नेवाज।सुखद वालि रावन गये घरही सहित समाज॥१०१॥हारे यट नदे सकहिं तुलसी जेनर नीच॥निदरहिं वलिहरिचंद कहँ किहु काकर नद धीच॥१०२॥तुलसी निज कीरति चहहिं परकीरति कहँ खोय॥तिन्हके मुहु मसि लागिहैं मिटहि न मरिहै धोय॥१०३॥नीचे चंग सम जानिबो सुनि लखि तुलसी दास॥ढील देत महि गिरि परत खैंचत चढत अकास॥१०४॥सह बासी कांची भषे पुरजन पाक प्रवीन॥काल छेप केहि विधि करे तुलसी खग म्रग मीत॥१०५॥बढ़े पाप बाढ़े किये छोटे कार तल जात॥तुलसी तापर सुख चहत विधि पर बहु

तरिसात॥१०६॥सुमनि नेवारहिं परि हरहिं दल सुत-
नहु संग्रास॥सकल गये तन बिन भये साखी जादो
काम॥१०७॥कलहन जान बिछोट करि कठिन परम
परिनाम॥लगत अनल अति नीच घर जरत धनिक
धन धाम॥१०८॥जूकेते भल बूकिबो भलो जीत तें
हारि॥ जहाँ जाइ जहँ डाइबो भलो जो करिय बिचार॥
१०९॥तुलसी तीन प्रकारते हित अनहित पहिचान।
पर बस परे परोस बस परे मामला जान॥११०॥दुर-
जन बदन कमान सम बचन बिमुंचत तीर॥सज्जन
उर बेधत नहीं क्षमा समाह सरीर॥१११॥कोरव पंडव
जानिबो क्रोध छमाके सीम॥पांचहि मारि नसै सकै
सयो निपाते भीम॥११२॥ जो मधु दीन्हेते मरै माहुर
देउ नताउ॥जग जिति हारे परसु धर हारि जिते
रघुराउ॥११३॥ क्रोध नरसना खोलिये बरु खोलव तर-
वारि॥सुनत मधुर परिनाम हित बोलब बचन बि-
चारि॥११४॥तुलसी मीठो समयते माँगी मिलै जे
मीच॥सुधा सुधा कर सभय बिन काल कूटते नीच।
११५॥पाही खेती लगन बडि रिन कुब्याज मग
खेतु॥बैर आपते बडेनते कियौ पांच दुख हेतु॥
११६॥रीक खीक गुरु देत सिष सिषहि सुसाहेब
साध॥तोरि खाय फल होय भल तरु काटे अपराध
११७॥ चको चकोरहि चंद जिमि ज्ञानते सोक समाज।
करम धरम सुखसम्पदा तिमि जानिबो कुराज॥११८॥
पेट नफन्दन बिन कहे कहे नलागत देर॥बोलब बचन
बिचार जुत समुझि सुफेर कुफेर॥११९॥ प्रीत मगाई

सकल विधि वनिज उपाय अनेक॥ कलबल छल कलिमल मलिन डहकत एकहि एक॥२२०॥ दंभ सहित कलिधर्म सब छल समेत व्यवहार॥ स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार॥२२१॥ धातु वधी निरुपाधि वर सद्गुरु लाभ सुमीत॥ दम्भ दरस कलि काल महं पोथिन सुनव सुनीत॥ २२२॥ फोरहिं मूरख सिल सदन लागे अढुक पहार॥ कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस उहार॥२२३ जौं जगदीस तौं अति भलो जौं महीस तोभाग॥ जन्म जन्म तुलसी चहत राम चरन अनुराग॥२२४ का भाषा का संसकृत विभव चाहिये सांच॥ काम जो आवै कामरी का लै करिय कमाच॥ २२५॥ वरन विसद मुक्ता सरिस अर्थ सूत्र सम तूल॥ सत सैया नग्र वर विसद गुन सोभा सुख मूल॥२२६॥ वर माला वाला समति उर धारै जुत नेह॥ सुख सोभा सरसाय नित लहै राम पति गेह॥२२७॥ भूप कहहिं लघु गुनिन कहं गुनी कहहिं लघु भूप॥ सहि गिरि गत दोउ लखत जिमि तुलसी स्वच्छ सरूप॥२२८॥ दोहा चारु विचारु चलु परिहरि वाद विवाद॥ सुकृत सींम स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद॥२२९ इति श्री मद्गोसाईं स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्त शतिकायां राजनीत प्रस्ताव वरननो नाम सप्तमः सर्गः॥

मुनशी नवल किशोरके लखनऊके छापेखानेमें छपी लिखितं कालिका प्रसाद कायस्थ जौलाई सन १८७३ई